कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 9 फरवरी 2026 वर्ष - 80 अंक - 24 मूल्य - रु. 12/- कुल पृष्ठ -16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

अमलाहा (ICARDA) से केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का बड़ा संदेश

देश में दलहन उत्पादकता बढ़ाने हुआ क्रांति का आगाज

(विशेष प्रतिनिधि)

अमलाहा (सीहोर, म.प्र./कृषक जगत)। मध्य प्रदेश के सीहोर ज़िले के अमलाहा स्थित खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र (FLRP) से आज देश की दलहन नीति और किसान-केंद्रित कृषि विमर्श का नया अध्याय जुड़ा और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में देशव्यापी दलहन क्रांति का आगाज़ हुआ। यहाँ आयोजित राष्ट्रीय दलहन परामर्श एवं रणनीति बैठक में एक ही मंच पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान के साथ ही केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी-श्री रामनाथ ठाकुर तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, राजस्व मंत्री म.प्र. श्री करण सिंह वर्मा, कृषि मंत्री म.प्र. श्री एदल सिंह कंषाना, श्रीमती कृष्णा गौर राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार म.प्र. एवं कई राज्यों के कृषि मंत्री, शीर्ष वैज्ञानिक, ICAR–ICARDA के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान, एफपीओ, बीज और दाल मिल प्रतिनिधि जुटे और संदेश साफ़ था: दलहन में आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप अब खेतों के बीच से तय होगा, दिल्ली के फाइलों के कमरों से नहीं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर में इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र) अंतर्गत खाद्य दलहन अनुसंधान प्लेटफार्म के प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ किया।

यह पहल दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता, किसानों की आय वृद्धि और खेती को वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है।

'खेती खेत में समझी जाती है, दिल्ली में नहीं'

कृषि मंत्री ने कहा कि खेत से दूर बैठकर खेती को समझा नहीं जा सकता। इसी सोच के साथ पहली बार कृषि मंत्रालय की महत्वपूर्ण बैठक दिल्ली से बाहर गाँव में आयोजित की गई, ताकि नीति और ज़मीन के बीच की दूरी खत्म हो।

दलहन उत्पादकता बढ़ाना सरकार का लक्ष्य

मसूर, चना, उड़द, बटरा और मूंग जैसी दलहनों की पैदावार बढ़ाने पर विशेष फोकस रहेगा। किसानों को ऐसे बीज उपलब्ध कराए जाएंगे जो अधिक उत्पादन देने के साथ रोगमुक्त भी हों।

ICAR–ICARDA की आधुनिक प्रयोगशालाएँ गढ़ेंगी खेती का भविष्य

इकार्डा में स्थापित होने वाली प्लांट जीनोमिक्स, टिश्यू कल्चर, ब्रीडिंग और पैथोलॉजी जैसी अत्याधुनिक लैब में शोध कर बेहतर बीज तैयार किए जाएंगे। नियंत्रित तापमान में बीज उत्पादन कर साल में तीन बार उत्पादन संभव बनाया जाएगा। प्रयोगशालाओं में कृत्रिम वातावरण बनाकर तेज़ी से बेहतर बीज विकसित होंगे। फंगस, वायरस और मिट्टी जनित रोगों पर शोध कर रोगमुक्त फसलें तैयार की जाएंगी।

किसानों के बीच होगा बीज विमोचन

कृषि मंत्री ने घोषणा की कि अब कोई भी बीज दिल्ली में रिलीज नहीं होगा। अलग-अलग राज्यों में, किसानों के बीच जाकर नए बीजों का विमोचन किया जाएगा।

क्लस्टर मॉडल से संगठित खेती को बढ़ावा

क्लस्टर में जुड़ने वाले किसानों को बीज किट दी जाएगी। आदर्श खेती के लिए प्रति हेक्टेयर रु. 10,000 की सहायता प्रदान की जाएगी।

बीज से बाज़ार तक सरकार की सीधी पकड़

सरकार का फोकस केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहेगा। किसानों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य मिले, इसके लिए संपूर्ण व्यवस्था बनाई जाएगी।

क्लस्टर स्तर पर दाल मिल : रु. 25 लाख तक की सब्सिडी

दाल उत्पादन वाले क्षेत्रों में ही दाल मिल स्थापित करने को प्रोत्साहन मिलेगा। दाल मिल लगाने पर भारत सरकार रु. 25 लाख तक की सब्सिडी देगी।

देशभर में 1,000 दाल मिलें, म.प्र. में 55

इस मिशन के तहत देश में 1,000 दाल मिलें स्थापित की जाएँगी, जिनमें से 55 दाल मिलें मध्यप्रदेश के विभिन्न क्लस्टरों में खोली जाएँगी, ताकि उत्पादन, प्रोसेसिंग और बिक्री एक ही क्षेत्र में हो सके।

(कार्यक्रम के संबंधित फोटो पृष्ठ 3 पर)

किसानों को बनाएंगे सशक्त : डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अन्य राज्यों से आए कृषि मंत्रियों से भी आग्रह किया कि भारत की कृषि उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर दलहन उत्पादन बढ़ाने तथा किसानों को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस कदम है।

'खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र' में ICARDA के नवनिर्मित प्रशासनिक भवन, प्रशिक्षण केंद्र तथा अत्याधुनिक प्लांट टिशुकल्चर प्रयोगशाला का लोकार्पण किया।

'राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन' अंतर्गत आयोजित 'राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन' के अवसर पर 'पल्सेस मिशन पोर्टल' का शुभारंभ भी किया गया। 'राष्ट्रीय दलहन मिशन' के अंतर्गत मध्यप्रदेश को रू. 354 करोड़ का बजट मिला है। दलहन उत्पादन में मध्यप्रदेश, देश में पहले स्थान पर है। इस मिशन का सर्वाधिक लाभ प्रदेश के किसानों को मिलेगा।

उपस्थित रहे अन्य राज्यों के कृषि मंत्री

श्री आशीष नंदकिशोर जायसवाल कृषि मंत्री महाराष्ट्र, श्री रामकृष्ण यादव कृषि मंत्री बिहार, श्री श्याम सिंह राणा कृषि मंत्री हरियाणा, श्री रामविचार नेताम कृषि मंत्री छत्तीसगढ़, श्री कनकवर्धन सिंह देव उपमुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री उड़ीसा, श्री सूर्यप्रताप शाही कृषिमंत्री उ.प्र., श्री किरोड़ीलाल मीणा कृषि मंत्री राजस्थान, श्री रमेशभाई भूराभाई कटारा कृषिमंत्री गुजरात।

अधिकारीगण

श्री संजय कुमार अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि भारत सरकार, डॉ. मांगीलाल जाट डीजी आईसीएआर, श्री शिवकुमार अग्रवाल निदेशक इकार्डा, श्री अली आबूसाबा महानिदेशक इकार्डा।

केन्द्रीय बजट 2026-27 में

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के लिए 1 लाख 62 हजार करोड़ से अधिक का प्रावधान

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने संसद में केंद्रीय बजट 2026-27 पेश करते हुए कहा कि बजट में उभरती प्रौद्योगिकियों को और एआई को आम नागरिक की आकांक्षाओं को पूरा करने और भारत की समृद्धि के पथ पर उन्हें सशक्त प्रतिभागी बनाने के लिए तथा उनके क्षमता निर्माण को मुख्य घटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। केन्द्रीय बजट 2026-27 एआई मिशन, नेशनल क्वांटम मिशन, अनुसंधान नेशनल रिसर्च फंड और अनुसंधान विकास एवं नवाचार निधि के माध्यम से नई प्रौद्योगिकियों को सहायता प्रदान करना, सरकार की मुख्य पहल है। बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ का प्रावधान किया गया है, जो मुख्य रूप से उच्च-मूल्य वाली फसलों (नारियल, काजू, चंदन), तकनीकी विकास, और डिजिटल खेती (AI-आधारित 'भारत विस्तार') पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना है।

बजट में मुख्य कृषि आकर्षण

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र : कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ आवंटित, जबकि ग्रामीण विकास के लिए रु. 2,73,108 करोड़ रखे गए हैं।

उच्च-मूल्य वाली फसलें : कोकोनट, काजू, चंदन और कोको जैसी फसलों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन।

डिजिटल कृषि (भारत विस्तार) : एआई आधारित 'भारत विस्तार' सिस्टम से किसानों को सही समय पर, अपनी भाषा में, और सही जानकारी मिलेगी (रु. 150 करोड़ का आवंटन)।

फसल विविधीकरण : नकदी फसलों की ओर जाने पर जोर।

मत्स्य पालन एवं पशुपालन : समुद्री तटीय क्षेत्रों में मत्स्य पालन श्रृंखला और पशुपालन में निवेश को बढ़ावा।

अमृत सरोवर : पानी के भंडारण के लिए 500 जलाशयों का विकास किया जाएगा।

पीएम-किसान, फसल बीमा योजना, और सिंचाई योजनाओं के लिए आवंटन जारी रहेगा।

काजू, कोको के लिए बनेंगे कार्यक्रम

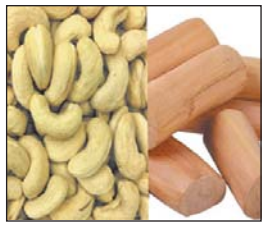

वित्त मंत्री ने कहा कि तटीय इलाकों में नारियल, चंदन, काजू जैसी फसलों को सहायता दी जाएगी। नारियल उत्पादन में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए नारियल संवर्धन योजना लाई जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय काजू और कोको के लिए समर्पित कार्यक्रम लाए जाएंगे। इन्हें वैश्विक ब्रांड बनाने का काम किया जाएगा। भारतीय चंदन लकड़ी की गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए राज्यों से सहयोग किया जाएगा। वहीं अखरोट, बादाम की पैदावार बढ़ाने के लिए भी विशेष कार्यक्रम शुरू होगा।

भारत-VISTAAR कार्यक्रम शुरू होगा

वित्त मंत्री ने बताया कि एआई टूल- भारत-विस्तार कार्यक्रम की शुरुआत होगी। यह बहुभाषी एआई टूल किसानों को बेहतर फैसले लेने में मदद करेगा, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ेगी। उन्होंने यह भी बताया कि ग्रामीण महिलाओं की अगुवाई वाले उद्यमों के लिए स्व-सहायता उद्यम (SHE-Marts) शुरू किए जाएंगे।

सहकारिता

दूध, तिलहन, फल या सब्जियों की आपूर्ति में लगी प्राथमिक सहकारी संस्थाओं को पहले से उपलब्ध कटौती का विस्तार अब पशुचारे और बिनौले की आपूर्ति करने वालों तक भी किया गया है। किसी अधिसूचित राष्ट्रीय सहकारी संघ द्वारा 31 जनवरी 2026 तक कंपनियों में दिए गए उनके निवेश पर प्राप्त लाभांश आय पर तीन वर्ष की अवधि के लिए छूट देने का प्रस्ताव।

पशुपालन के लिए लोन-आधारित सब्सिडी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि स्टार्टअप और महिलाओं की अगुवाई वाले समूह बाजार से जुड़ेंगे। जबकि पशुपालन क्षेत्र के लिए लोन-आधारित सब्सिडी कार्यक्रम शुरू होंगे।

पहला कर्तव्य *- उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाने तथा वैश्विक उथल-पुथल के परिदृश्य में लचीलापन लाकर आर्थिक विकास को तेज करना और उसकी गति बनाए रखना*

दूसरा कर्तव्य- *भारत की समृद्धि के पथ में सशक्त साझेदार बनाने के लिए लोगों की आकांक्षाएं पूरी करना और उनकी क्षमता बढ़ाना।*

तीसरा कर्तव्य *- सरकार की सबका साथ, सबका विकास के दृष्टिकोण के अनुकूल- यह सुनिश्चित करना कि सार्थक भागीदारी के लिए प्रत्येक परिवार, समुदाय और क्षेत्र की संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों तक पहुंच उपलब्ध हो।*

पुशधन उद्यमों का संवर्धन और आधुनिकीकरण होगा। पशुधन किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा दिया जाएगा। सरकार 20 हजार से अधिक पशु डॉक्टरों की उपलब्धता करेगी। निजी क्षेत्र में पशु रोग विशेषज्ञ और पैरा पशु शल्य महाविद्यालय, पशु अस्पताल, प्रयोगशालाओं के लिए ऋण संबद्ध पूंजी सब्सिडी सहायता योजना शुरू करने का प्रस्ताव।

सिंचाई पर भी ध्यान

सिंचाई पर भी ध्यान दिया गया है, क्योंकि अच्छी सिंचाई के बिना उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती मुश्किल होती है. सरकार पहले से ही पीएम कृषि सिंचाई योजना चला रही है और इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने से पानी की उपलब्धता बढ़ेगी। ये घोषणाएं किसानों की आय दोगुनी करने के सपने को करीब ला रही हैं। छोटे किसान जो अब तक सिर्फ अनाज या सब्जियां उगाते थे, वे अब हाई-वैल्यू क्रॉप्स में जा सकेंगे। इससे ग्रामीण रोजगार बढ़ेगा, निर्यात बढ़ेगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

विकसित भारत बनाने के बजट में कृषि, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन को सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस बजट में नारियल, काजू, कोको और चंदन के उत्पादन में लगे किसानों के लिए महत्वपूर्ण उपाय किए गए हैं। भारत विस्तार एआई टूल किसानों को उनकी अपनी भाषा में जानकारी उपलब्ध कराकर उनकी बहुत मदद करेगा।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

वर्ष 2026-27 का केंद्रीय बजट विकसित भारत@2047 के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में प्रभावी कदम है। बजट में गरीबों, युवाओं, अन्नदाताओं और महिलाओं पर विशेष फोकस है। यह बजट विकास को और अधिक गति देगा तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक अर्थव्यवस्था में उच्च स्थान दिलवाले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आर्थिक प्रगति को बढ़ाना, जन सामान्य की उम्मीदों को पूरा करना और सबका साथ सबका विकास बजट की मुख्य विशेषता है।

- डॉ. मोहन यादव,
मुख्यमंत्री (म.प्र.)

'युवाओं के पास नौकरी नहीं है, विनिर्माण गिर रहा है, निवेशक पूंजी निकाल रहे हैं, घरेलू बचत घट रही है, किसान संकट में हैं, आसन्न वैश्विक झटके, सभी को नजरअंदाज कर दिया गया।' उन्होंने दावा किया कि यह एक ऐसा बजट जिसमें चीजों को दुरुस्त करने के बजाय वास्तविक संकटों से आंख मूंद ली गई।

-राहुल गांधी,
लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष

कृषि और ग्रामीण विकास का बजट 4.35 लाख करोड़ से अधिक : श्री शिवराज

कृषि बजट में उल्लेखनीय वृद्धि

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि विभाग का बजट बढ़ाकर इस वर्ष 1,32,561 करोड़ रुपये कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि कृषि शिक्षा और अनुसंधान, विशेषकर आईसीएआर सहित, के लिए 9,967 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे शोध और नवाचार को बल मिलेगा। किसानों के लिए उर्वरक सब्सिडी पर उन्होंने कहा कि सस्ता खाद और उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए 1,70,944 करोड़ रुपये की सब्सिडी का प्रावधान है, ताकि उत्पादन की लागत कम हो और किसान को राहत मिले।

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने केंद्रीय बजट 2026-27 को विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की मज़बूत नींव रखने वाला ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बजट बताया है। श्री चौहान ने कहा, 'यह बजट विकसित भारत के सपने को साकार करने का महाकाव्य है। यह समाज की समृद्धि और संकल्पों की सिद्धि का बजट है - यह डेवलप्ड इंडिया का डायनामिक बजट है। किसान, युवा, महिला और गरीब - देश की इन चारों जातियों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का यह बजट एक नया अध्याय लिख रहा है।'

ग्रामीण विकास बजट में 21% की वृद्धि

श्री चौहान ने बताया कि ग्रामीण विकास विभाग के बजट में इस वर्ष 21 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास और कृषि विभाग को जोड़कर देखें तो ग्रामीण विकास और कृषि मंत्रालय का सम्मिलित बजट अब 4 लाख 35 हज़ार 779 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है, जो गांव और किसान के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास के कुल बजट में अकेले 'विकसित भारत जी राम जी' योजना के लिए राज्यों के अंशदान सहित लगभग 1.51 लाख करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया गया है।

श्री सिंह ने कहा कि लखपति दीदी योजना की सफलता को आगे बढ़ाते हुए बजट में सेल्फ हेल्प एंटरप्रेन्योर 'SHE मार्ट' की व्यवस्था की गई है।

कृषक कल्याण वर्ष-2026

किसानों के कल्याण के लिए मिशन मोड में करें काम : डॉ. यादव

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राज्य सरकार द्वारा घोषित 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' के तहत किसानों की बेहतरी और उनके जीवन में खुशहाली लाने के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाओं की घोषणा की है। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों का समग्र कल्याण सरकार की प्राथमिकता है, और इस दिशा में सरकार मिशन मोड में काम करेगी। मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी कमिश्नर्स और कलेक्टर्स को संबोधित किया और कृषक कल्याण वर्ष के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सभी कमिश्नर्स-कलेक्टर्स को वीसी से दिए निर्देश

कृषक कल्याण वर्ष में उठाए जाने वाले कदम:

किसान रथ का संचालन : मुख्यमंत्री ने किसानों से निरंतर संवाद स्थापित करने और उन्हें ग्रीष्मकालीन मूंग के स्थान पर मूंगफली और उड़द की फसल लेने के लिए प्रोत्साहित करने की बात की। इसके लिए किसान रथ चलाए जाएंगे, जिनका शुभारंभ स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा किया जाएगा।

प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा : मुख्यमंत्री ने प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाने की बात की। इसके अलावा, ई-विकास पोर्टल के माध्यम से जलवायु, ऊर्जा और सतत कृषि को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया।

पराली जलाने की घटनाओं पर रोक : मुख्यमंत्री ने कलेक्टर्स को अपने-अपने जिलों में पराली/नरवाई जलाने की घटनाओं पर सख्त एक्शन लेने का निर्देश दिया। पराली और भूसे का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने के लिए गौशालाओं में पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी।

दुग्ध उत्पादन में वृद्धि : दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए समन्वित प्रयास किए जाएंगे और पशुपालकों को नए उपायों के बारे में जागरूक किया जाएगा। इसके लिए एक ऐप भी तैयार किया जा रहा है, जो पशुपालकों को गाय और भैंस के आहार संबंधी जानकारी प्रदान करेगा।

मत्स्य पालन और कृषि आधारित उद्योगों के विकास के लिए कदम : मत्स्य बीज उत्पादन के लिए जिला स्तर पर मत्स्य प्रक्षेत्र विकसित किए जाएंगे। नगरीय निकायों में फिश पार्लर स्थापित किए जाएंगे।

फरवरी और मार्च में आयोजित होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

फरवरी में कोदो-कुटकी बोनस वितरण कार्यक्रम: डिंडोरी जिले में कोदो-कुटकी का बोनस वितरण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

मार्च में राज्यस्तरीय सहकारिता सम्मेलन: राज्यस्तरीय सहकारिता सम्मेलन में किसानों को नए कृषि ऋण देने के अलावा अन्य योजनाओं के तहत लाभ प्रदान किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कृषक कल्याण वर्ष की योजना को सफल बनाने के लिए सभी विभागों और जनप्रतिनिधियों से सक्रिय सहयोग की अपील की और यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि किसानों को हर संभव सहायता प्राप्त हो

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल, प्रमुख सचिव श्री उमाकांत उमराव, प्रमुख सचिव श्री डी.पी. आहूजा, सचिव कृषि श्री निशांत वरवड़े, सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त जनसम्पर्क श्री दीपक कुमार सक्सेना सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ओला-पाला से प्रभावित फसलों का सर्वे कर सहायता राशि उपलब्ध कराएं : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में जहां-जहां भी ओला-पाला से फसलें प्रभावित हुई हैं, उन जिलों के कलेक्टर्स, सर्वे कराकर तत्काल सहायता राशि किसानों को उपलब्ध कराएं। किसानों के सभी प्रकार के हित सुनिश्चित करने और उनकी आय दोगुना करने के उद्देश्य से ही वर्ष-2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

कृषक कल्याण कृषि वर्ष में मालवा, निमाड़, चंबल और विंध्य अंचलों में कृषि कैबिनेट आयोजित की जाएगी। कृषि के साथ उद्यानिकी, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य पालन जैसी गतिविधियां अपनाने के लिए कृषकों को प्रेरित किया जा रहा है। हाल ही में प्रदेश में पहली बार राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव आयोजित किया गया। पुष्प उत्पादन और देश-विदेश में फूलों की बेहतर मार्केटिंग व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रदेश में नरवाई प्रबंधन और पराली जलाने पर नियंत्रण के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। भावांतर योजना में सरसों और अन्य तिलहन फसलों को भी शामिल करने पर विचार किया जा रहा है। मूंग के स्थान पर उड़द को प्रोत्साहित करने के लिए नीति बनाई जा रही है। इसके लिए किसानों को प्रेरित करना आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कैबिनेट की बैठक से पहले मंत्रि-परिषद सदस्यों को संबोधित कर रहे थे।

श्रीअन्न से आत्मनिर्भर बनेगा किसान : श्री कंषाना

भोपाल में लगा कृषि विज्ञान मेला

भोपाल (कृषक जगत)। कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि मिलेट केवल फसल नहीं, बल्कि स्वस्थ भविष्य और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। उन्होंने कहा कि जिसे कभी मोटा अनाज कहा जाता था। प्रधानमंत्री के प्रयासों से वही अनाज 'श्रीअन्न' के रूप में विश्वभर में सम्मान पा रहा है। श्रीअन्न से मध्यप्रदेश आत्मनिर्भर किसान की ओर अग्रसर है।श्री कंषाना दशहरा मैदान, टीटी नगर भोपाल में श्रीअन्न मिलेट प्रोत्साहन एवं आत्मा योजना के तहत कृषि विज्ञान मेला के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे।

श्री कंषाना ने कहा कि श्रीअन्न आयरन, कैल्शियम एवं फाइबर जैसे पोषक तत्वों से भरपूर है तथा कुपोषण के विरुद्ध हमारी लड़ाई में मजबूती से सहायक सिद्ध हो रहा है। साथ ही मिलेट कम पानी, कम खाद एवं प्रतिकूल जलवायु में भी बेहतर उत्पादन देता है। इससे जल संरक्षण के साथ ही किसानों की आय में भी वृद्धि हो रही है। कृषि मंत्री ने किसानों को प्रदर्शित उन्नत कृषि यंत्रों एवं वैज्ञानिक सलाह का लाभ उठाने की अपील की।

9 किसान पुरस्कृत

कृषि मंत्री श्री कंषाना ने ग्राम जूनापानी के कृषक श्री जीवन सिंह को पशुपालन के क्षेत्र में जिला स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार के रूप में 25 हजार रुपए एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया। विकासखंड स्तरीय पुरस्कार के रूप में 8 किसानों को 10-10 हजार रुपए और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इनमें ग्राम दोजयाई के श्री किशन सिंह को पशुपालन के क्षेत्र में, ग्राम सेवनिया ओंकारा की सुनीता रैकवार एवं कोलूखेड़ी के श्री हर्ष दांगी को मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में, ग्राम भैरोंपुरा के श्री राम मोहन मीणा को उद्यानिकी, ग्राम मुगालिया छाप के श्री महेश मीणा एवं जमुसर कला की संगीता जाटव को कृषि अभियांत्रिकी, ग्राम टीला खेड़ी के श्री रमेश सिंह और नामदापुरा के श्री दीपक मीणा को कृषि के क्षेत्र में सराहनीय उत्कृष्ट योगदान के लिए विकास खंड स्तरीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में विधायक श्री भगवानदास सबनानी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री मोहन सिंह जाट, जनपद अध्यक्ष बैरसिया श्री कुबेर सिंह गुर्जर, प्रभारी संयुक्त संचालक कृषि श्रीमती सुमन प्रसाद सहित वैज्ञानिक एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित थे।

दलहन पर राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन-ईकार्डा सीहोर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्रीय - स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में पुस्तकों का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्र स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में श्री संजय अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि मंत्रालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है।
- डॉ. राधाकृष्णन

रबी के बाद जायद की तैयारी

रबी की मुख्य फसल गेहूं की कटाई के साथ-साथ एक लम्बा - चौड़ा रकबा खाली हो जायेगा। कुछ दशक पहले कटाई उपरांत खेत खाली पड़े रहते थे। ग्रीष्मकाल में जुताई करके खरीफ बुआई की अवधि में जमीन को मानो आराम दिया जाता था परंतु हमारी बढ़ती जनसंख्या, घटता रकबा और भोजन की मांग की पूर्ति हेतु हमें कुछ सीमित रकबा जायद के लिये तैयार करना होगा। एक तरह से कृषक जो जायद लगाना चाहते हैं के लिये अतिरिक्त कार्य, एक तरफ खलिहानों में रखे अनाज की गहाई, उड़ावनी, भंडारण का कार्य तो दूसरे तरफ खेतों में जुताई का कार्य, तो तीसरा कार्य इस जायद की मूंग/उड़द की बुआई का कार्य परंतु इन सभी कार्यों को सफलता से निपटाना किसी संगम नहाने से कम महत्व का कार्य नहीं मानना चाहिये क्योंकि सभी कार्य वर्तमान की बदलती परिस्थितियों की चुनौतियों को सफलता से सामना करने के लिये शक्ति, ज्ञान और संसाधन उपलब्ध कराते हैं। काम की अधिकता से कभी भी घबराना नहीं चाहिये क्योंकि विश्व में केवल कृषि उत्पादन ही एक ऐसा कार्य है जिसमें रुकने के लिये कोई स्थान नहीं थम सकते हैं, रुक नहीं सकते फिर हमेशा से उक्त सभी कार्यक्रम करते भी आये हैं जरूरत तो केवल इतनी ही है कि विभिन्न कार्यों की प्राथमिकता को पहचाना जाये। खेत काटने के बाद खलिहान में फसल फैलाकर सुखाने के बीच के समय का उपयोग जायद के लिये बोने वाले रकबे में पलेवा देकर छोड़ा जा सकता है। गरमी है तापमान के कारण दो-तीन दिन में बतर आ जायेगी। गहाई का कार्य करते-करते जायद के रकबे की बुआई निपटाई जा सकती है क्योंकि विलम्ब करने से जायद की फसल के पकने में देरी होगी और

जून के द्वितीय सप्ताह तक उसकी कटाई, गहाई, विपणन, भंडारण के कार्य भी निपटाने होंगे। जायद की फसलों की बुआई के बाद उसके रखरखाव में केवल सिंचाई आवश्यक होती है इस बीच अनाज को अच्छी तरह सुखाकर भंडारण भी किया जा सकता है। किसी भी कीमत पर जायद की बुआई उपरांत बचे रकबे में गेहूं की नरवाई जलाने का प्रयास नहीं किया जाये बल्कि खेत की गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ दिया जाये। गहरी जुताई से अनेकों लाभ हैं भूमि में छुपी व्याधियों के अवशेष भीषण गर्मी में तपकर नष्ट हो जाते हैं भूमि के अंदर छुपे विभिन्न जीवाणुओं को प्रकाश, हवा सुलभ हो जाती है जिससे उनके पलने-पुसने के लिये उपयुक्त वातावरण बन सके और वर्षा काल में गिरते जल का संग्रहण कम से कम 9-10 इंच तक भूमि में गहराई तक हो सके। कहना ना होगा परंतु यह यर्थात है कि भूमि के भीतर जितनी अधिक से अधिक गहराई तक नमी का संरक्षण हो सकेगा उतना ही अधिक लाभ आने वाली फसल के विकास के लिये हो सकेगा। नरवाई जलाने की बात तो हो-हल्ले में अंजाम को बिना सोचे-समझे करने वाली बात होती है, सस्ता, सुन्दर परंतु कोई नहीं जानता कि कितना खतरनाक होता है खेत में माचिस की काड़ी लगाना, अनियंत्रित लपटों की चपेट में गांव तक आ सकते हैं और जान-माल की हानि की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा भूमिगत मित्र जीवाणुओं का खात्मा तो ध्यान रहे नरवाई में पानी देकर नरम करें फिर गहरी जुताई करके उसे खेतों में मोड़ दें ताकि कालान्तर में अच्छी खाद बनकर खेतों की उर्वराशक्ति में इजाफा किया जा सके। नरवाई की समस्या कम्बाईन से फसल काटने के उपरांत ही आती है। कटाई के तुरंत बाद रोटावेटर का उपयोग करके खेत बनाने से भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ जाती है। रोटावेटर से खेत की तैयारी की लागत में 20-25 प्रतिशत तक की बचत होती है। कटाई उपरांत प्रबंध का अपना अलग महत्व होता है जिसे गंभीरता से, वरीयता से, प्राथमिकता निर्धारित करके ही किया जा सकता है इसे एक संगम में नहाने जैसा पवित्र कार्य ही मान कर किया जाये तो अच्छे परिणाम मिल सकेंगे।

आम बजट 2026 : ग्रामीण समृद्धि की रीढ़ बनेगा पशुधन

● प्रमोद भार्गव

ग्राम और ग्रामीण की समृद्धि की रीढ़ अब केवल खेती-किसानी तक सीमित नहीं रह गई है, इस आम बजट में सरकार ने पशुधन से पशुपालकों और दुग्धउत्पादकों की आय बढ़ाने के ठोस उपाय कर दिए हैं। इससे रोजगार बढ़ने के साथ दैनिक और मासिक आमदनी में स्थिरता आएगी। खेती पर बढ़ते संकट कम होंगे। पशुधन, मुर्गी व मत्स्य पालन ग्रामीणों की आजीविका के भरोसे के सहारा बनेंगे। यह पशुधन स्वस्थ बना रहे, इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 20 हजार से अधिक पशु चिकित्सकों की उपलब्धता भी तय की गई है ताकि गांव में ही त्वरित इलाज की सुविधा मिले। फिलहाल देश में पशु-चिकित्सकों की बहुत कमी है, इस कारण उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इस कमी को दूर करने के लिए डेढ़ लाख पशु देखभाल प्रशिक्षित सेवकों की अतिरिक्त तैनाती की जाएगी। इस उपाय से दुधारू पशुओं की असमय मृत्यु में कमी आएगी। यदि पालतू पशुओं को आरक्षित वनों में चरने की छूट दे दी जाती है तो सड़क दुर्घटनाओं में पशुओं के मरने में तो कमी आएगी ही,पौष्टिक चारा मिलने से दूध भी पौष्टिक होगा।

पशुधन की महिमा इस तथ्य से जानी जा सकती है कि खेती से होने वाली कुल आय में करीब 16 प्रतिशत की भागीदारी पशुपालन और उनसे उत्पादित आहार से है। इस आय में लगातार पिछले ग्यारह साल से 12.77 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हो रही है। यानी खेती जहां लघु व मध्यम किसानों के लिए घाटे का सौदा बनी हुई है, वहीं पशुपालन ग्रामीणों को भरोसे की आय का साधन बन गया है।

भारत दूध उत्पादन में दुनिया में पहले सोपान पर है। विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत 25 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। बीते 10 साल में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57 प्रतिशत बढ़ा है। नतीजतन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 2024-25 में 485 ग्राम प्रतिदिन हो गई है। भारत ने अमेरिका के लिए निर्मित वस्तुओं को बाजार नहीं खोले तो अनर्गल टैरिफ लगा दिए।

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था अब केवल खेती पर निर्भर नहीं रही है। आम बजट में पशुधन, दुग्ध, मुर्गी और मत्स्य पालन को सशक्त करने के ठोस प्रावधान ग्रामीण आजीविका को नया आधार देते हैं। पशु-चिकित्सा सेवाओं के विस्तार और कुशल मानव संसाधन की तैनाती से आय में स्थिरता, रोजगार वृद्धि और खेती पर बढ़ते संकटों में कमी आने की उम्मीद है।

पशुधन का संरक्षण इसलिए जरुरी है, क्योंकि ग्रामों में दूध नियमित नकद आय का पुख्ता आधार बना हुआ है। ग्रामीण रोजगार और अर्थव्यवस्था में इसकी बड़ी भागीदारी है। देश में 2019 में हुई 20वीं पशुधन गणना के अनुसार करीब 14 करोड़ गाय और 11 करोड़ भैंसें हैं। याक,ऊंट,भेड़ और बकरी भी दुधारू पशुओं में गिने जाते हैं। हालांकि अभी तक हमारा राष्ट्रीय आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो महज 20 फीसदी पशुओं का ही आनुवंशिक वर्गीकरण कर पाया है। इससे पता चलता है कि हम अपने पशुधन के प्रति कितने लापरवाह हैं। जबकि घरेलू नस्ल के दुधारू जानवरों को स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों में पलने-बढ़ने व वंश वृद्धि में ज्यादा मजबूत और जुझारु पाया जाता है। ये पशु जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बर्दाश्त करने में भी ज्यादा समर्थ होते हैं। भारत दूध उत्पादन में दुनिया का अग्रणी देश है। फिर भी दूध की आपूर्ति सिंथेटिक दूध बनाकर और पानी मिलाकर की जा रही है। यूरिया से भी दूध बनाया जा रहा है। दूध की बढ़ती मांग के कारण दूध का कारोबार गांव-गांव तक फैल गया है।

जैविक तकनीक के क्षेत्र में भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार इस क्षेत्र में देश में पहली बार ई-3 (इकोनोमी एनवायरमेंट, एमप्लायमेंट) नीति कुछ समय पहले जारी की हुई है। इसके तहत दूध, खाद्यान्न, पर्यावरण सहित आम जनजीवन के सामने खड़ी होने वाली प्रत्येक चुनौती से निपटने की तैयारी है। इस क्षेत्र में फिलहाल जनता को सबसे बड़ा लाभ जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध, दूध की कमी पूरा करने के साथ पौष्टिक भी होगा। अब तक बिना किसी सरकारी मदद के दूध का कारोबार फलता-फूलता रहा है। दूध का 70 फीसद कारोबार असंगठित ढांचा संभाल रहा है। इस व्यापार में लगे ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। लेकिन पारंपरिक ज्ञान से न केवल वे दुग्ध उत्पादन में दक्ष हैं, बल्कि दूध के सह-उत्पाद बनाने में भी कुशल हैं। दूध का 30 फीसदी कारोबार संगठित क्षेत्र, मसलन दूध डेयरियों के माध्यम से होता है। देश में दूध के उत्पादन से 96 हजार सहकारी संस्थाएं जुड़ी हैं। 14 राज्यों की भी अपनी दुग्ध सहकारी संस्थाएं हैं। देश में कुल कृषि खाद्य व दूध से जुड़ी प्रसंस्करण संस्थाएं केवल दो प्रतिशत हैं। बावजूद वे अशिक्षित किंतु पारंपरिक ज्ञान से कुशल ग्रामीण स्त्री-पुरुष ही हैं, जो दूध का देशी उपायों से प्रसंस्करण करके दही, घी, मक्खन, पनीर आदि बना रहे हैं। इस कारोबार की विलक्षण खूबी यह भी है कि इससे सात करोड़ से ज्यादा लोगों की आजीविका चलती है।

एक अनुमान क अनुसार भविष्य में जलवायु परिवर्तन और उच्च तापमान के चलते, सालाना दूध उत्पादन में 32 लाख टन की कमी आ सकती है। इस दूध का मूल्य 5,000 करोड़ रुपए के बराबर होगा। इसलिए जरुरी है कि दुधारू पशुओं की सभी प्रजातियों की नस्लों का संरक्षण व संवर्धन किया जाए। इस दृष्टि से 20 हजार पशु चिकित्सक, डेढ़ लाख दक्ष पशु सेवा प्रदाताओं के प्रबंध के साथ, 84 पशु चिकित्सा महाविद्यालय खोलने का प्रावधान इस बजट में किया गया है।

भारत में गिर, राठी, साहिवाल, देवनी, थारपारकर, लाल सिंध जैसे देशी नस्ल के दुधारू पशु उत्तर, मध्य, पूर्व और पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। वाकई यदि इनके आनुवंशिक स्वरुप को उन्नत करने और इनके वंश की वृद्धि के कारगर प्रबंध किए जाते हैं तो देसी नस्ल की गायों से दुग्ध का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। हालांकि अब पहली बार आम बजट में पशुधन के संरक्षण को व्यापक महत्व दिया गया है,जो सराहनीय पहल है। यदि यह योजना प्रभावी ढंग से क्रियान्वित होती है तो आने वाले चंद सालों में पशुधन ग्रामीण भारत की रोजगार की पुख्ता गारंटी बन जायेगा। पशुधन जब तकदीर बनेगा तो ग्रामों से पलायन भी थम जाएगा। **(सप्रेस)**

जायद में लगायें मूंग

किस्में

गंगा – 8 (गंगोत्री) : मूंग की किस्म सन् 2001 में विमोचित हुई थी 74–78 दिन में पककर तैयार होने वाली यह किस्म 12–14 क्वि./ हेक्टर पैदावार देती है। इसका दाना छोटा (4.06 ग्राम /100 दाने) तथा चमकीला होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति काफी प्रतिरोधक पायी गई है।

पी.डी.एम. 139 : 2001 में विमोचन की गई मूंग की यह किस्म लगभग 62–65 दिन में पकती है। इसका दाना छोटा होता है तथा 10–12 क्वि. प्रति हेक्टर पैदावार देती है। यह किस्म भी पीतशिरा मोजेक के प्रति न्यूनतम प्रतिरोधी पायी गई है।

आई.पी.एम. 02–03 (2009) : खरीफ एवं जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 62–68 दिन में पककर तैयार हो जाती है एवं इसकी औसत पैदावार 10–11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो जाती है। यह किस्म पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है।

आई.पी.एम. 02–14 (2010): जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 60–65 दिनों में पककर 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की औसत पैदावार देती है। यह पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है तथा यह किस्म दक्षिणी राजस्थान हेतु विकसित की गई है।

के. 851 (1982) : 60 से 70 दिन में पककर यह किस्म 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज।

पी. डी. एम.–11 (1987): 60 से 65 दिन में पककर यह किस्म 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

पूसा विशाल (2001): यह किस्म लगभग 58–61 दिन में पक कर 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। इसका दाना मोटा होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

समर मूंग लुधियाना (एस.एम.एल.)–668 (2003) : 60–65 दिन में पकने वाली यह किस्म 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देती है तथा पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

जहाँ सिंचाई की पूर्ण सुविधा हो वहाँ पर वर्ष में तीसरी फसल के रूप में जायद मूंग की खेती की जा सकती है। इसकी खेती किसान को अतिरिक्त आय देने के साथ भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने में सहायक है।

बीज उपचार: मूंग में इमिडाक्लोप्रिड 5 ग्राम/किलो बीज दर के हिसाब से बीजोपचार कर बुवाई करें।

खेत की तैयारी: रबी की कटाई के तुरन्त बाद भूमि की आवश्यकतानुसार एक बार जुताई कर खेत को तैयार करें। अंतिम तैयारी के समय ध्यान रखें कि भूमि समतल हो जाए तथा जल निकास अच्छा हो।

भूमि उपचार: बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को तीन ग्राम थायराम एवं बाविस्टीन से उपचारित करें।

राइजोबियम कल्चर से उपचार : दलहनी फसलों के बीजों को राईजोबियम से उपचारित करने से अधिक पैदावार होती है। आवश्यकतानुसार गरम पानी में 250 ग्राम गुड़ मिलाकर घोल बनाएँ तथा ठंडा होने पर 600 ग्राम जीवाणु संवर्ध मिला दें। इस मिश्रण की एक हेक्टेयर में बोये जाने वाले बीजों पर भली–भाँति परत चढ़ा दें व छाया में सुखाकर बुवाई करें।

उर्वरक: जायद मूंग हेतु 20 किलो नत्रजन व 40 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। उर्वरक की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दे दें।

बीज एवं बुवाई : जायद मूंग की अधिकतम पैदावार के लिए इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है। बुवाई हेतु 15–20 किलो बीज की प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 25 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखें।

सिंचाई : फूल आने से पूर्व तथा फलियों में दाना बनते समय सिंचाई अत्यन्त आवश्यक है। तापमान एवं भूमि में नमी के अनुसार अतिरिक्त सिंचाई दें।

निराई–गुड़ाई: आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। 30 दिन की फसल होने तक निराई–गुड़ाई कर दें। बुवाई के पूर्व खरपतवारनाशी फ्लूक्लोरोलीन 0.75 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाने के बाद बुवाई करने से खरपतवार पर प्रभावी नियंत्रण रहता है जिससे अधिक पैदावार मिलती है।

फसल कटाई : फलियों के झड़कर गिरने से होने वाली हानि को रोकने के लिये फसल पकने के बाद किन्तु दाने झड़ने से पहले कटाई कर लें। इसके बाद एक सप्ताह तक सुखा कर गहाई करके दाना निकाल लें।

मूंग की अनुशंसित किस्में

केएम 2195 स्वाती, आईपीयू 1026, आईपीयू 11–02, आईपीयू 13–01, गंगा–8, टीजेएम–3, पीकेवीएकेएम–4, आईपीएम 205–7 (विराट), आईपीएम 410–3 (शिखा), टीजेएम–37, पीडीएम–139, हम–16, हम–12, पूसा 0531, जेएम 721, पूसा विशाल, एसएमएल 668, सुकेती।

जायद में लगायें मक्का

भूमि का चुनाव – मक्के की खेती ऐसी भूमि में की जानी चाहिए जिसका पी.एच.मान 6.0 से 7.0 तक हो। जल भराव मक्के की फसल के लिए बहुत हानिकारक होता है। सामान्यत: मक्का की खेती सभी प्रकार की मृदाओं, बालुई मिट्टी से भारी चिकनी मिट्टी तक में सफलतापूर्वक की जा सकती है।

समय पर बुवाई – खरीफ के लिए बुवाई जून के द्वितीय पखवाड़ा से लेकर जुलाई के प्रथम पखवाड़ा तक व वर्षा आधारित द्विफसली खेती के लिए जून में खरीफ व नवम्बर माह में रबी फसल की बुवाई करें। जायद फसल लेने के लिए बुआई का समय जनवरी से मार्च तक का है।

भूमि की तैयारी– खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने के बाद दो से तीन बार कल्टीवेटर से आड़ी–खड़ी जुताई करके जमीन को भुरभुरी एवं महीन बना लेते हैं। पाटा चलाकर खेत को समतल बना लेना चाहिए। इससे अच्छा अंकुरण होता है। बुआई के 20 दिन पूर्व 20–25 गाड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मिला दिया जाता है।

दाने वाली किस्म	उर्वरक किलोग्राम प्रति हेक्टेयर		
	नाईट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
शीघ्र पकने वाली	80	50	30
मध्यम पकने वाली	100	60	40
देरी से पकने वाली	120	60	40

उन्नतशील किस्में – जेएम 215, 218, सीएमएच–08–433, नर्मदा मोती (आईसी 9001), जवाहर मक्का 216, आजाद कमल (9803), प्रताप मक्का–5, जवाहर पॉपकार्न 11, जेवीएम 421, चंद्रमणि (आर–2005–2), एचक्यूपीएम–1, 4, 5, पीएमएच 5, को–6, एनएमएच 803, 731, केएमएच 3426, पूसा कम्पोजि–1, 2, जेएम–8, 12।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार– साधारण तया संकर जातियों का 15–20 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर एवं चारे की फसल के लिये 40–50 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। जायद में भुट्टे के लिए खेती करने पर 20 से 25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बीज बोने से पहले थायरम या बाविस्टीन नामक फफूंद नाशक दवा की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीज की बुआई 3–5 सेन्टी मीटर गहराई पर की जानी चाहिए। बोआई कतार विधि से करने पर अधिक लाभ प्राप्त होता है।

पौध अन्तरण – मौसम के आधार पर अंतराल रखने से उत्पादन अच्छा प्राप्त होता है। जायद मौसम की फसल में कतार से कतार के बीच की दूरी 45–60 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 सेंटीमीटर होना चाहिए। सामान्यत: खेत में 25–30 हजार पौधे प्रति एकड़ होने पर वांछित उत्पादन प्राप्त होता है।

उर्वरक व खाद प्रबंधन – मक्के की अनुमानित उपज पाने के लिए 2 वर्ष में एक बार 8–10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय खेत में मिला देना चाहिए। नत्रजन की मात्रा को तीन भागों में बांटकर प्रयोग करने से उर्वरक की पूरी मात्रा पौधों को प्राप्त होती है। नत्रजल की एक तिहाई मात्रा बुवाई के समय दूसरी तिहाई मात्रा मक्के की घुटने तक ऊंचाई होने पर व अंतिम मात्रा नरमंजरी अवस्था में देना चाहिए। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर की दर से जिंक सल्फेट का प्रयोग हर तीसरे वर्ष बुवाई के समय आधार उर्वरक के रूप में करना चाहिए।

जल प्रबंधन – फसल के लिए पानी की अधिकता एवं कमी दोनों ही हानिकारक है। खरीफमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ग्रीष्म कालीन फसल में 10–15 दिन के अंतरात में सिंचाई करते रहना आवश्यक होता है। पूरी फसल अवधि में 8–10 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें तीन सिंचाई फूल आने के पहले व तीन फूल आने के बाद की जाती है।

मक्का एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है। विश्व एवं भारत में मक्का एक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। इसका उपयोग पशु चारे के रूप में भी किया जाता है। इसके उत्पादन का 26 प्रतिशत मनुष्य आहार, 11 प्रतिशत जानवरों के आहार, 48 प्रतिशत मुर्गी के आहार, 12 प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन एवं शेष स्टार्च एवं बीज के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इसके अलावा मक्का का प्रयोग कार्न फ्लेक्स, तेल निकालने में, स्टार्च के लिये, पाप कार्न, शराब बनाने आदि के रूप में भी किया जाता है। विश्व के खाद्यान्न उत्पादन में इसका 25 प्रतिशत योगदान है। धान्य फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मक्का का स्थान तीसरा है।

भिण्डी लगाकर पाएं अधिक लाभ

भिण्डी सब्जी फसल 75 से 80 दिन में तैयार होकर की पैदावार दे देती है। भिण्डी की सब्जी पौष्टिक, लौह तत्व से परिपूर्ण, कब्ज विनाशक एवं विटामिन युक्त होती है। घरेलू खपत के अलावा कुल सब्जियों के निर्यात में भिण्डी का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है।

भिण्डी को गर्मी तथा वर्षा ऋतु में सफलतापूर्वक उगाकर अच्छा लाभ ले सकते हैं। इस समय खाली खेतों में भिण्डी की फसल उगाकर बाजार में अच्छा भाव मिलने से मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। भिण्डी की उन्नत किस्मों को उगाकर प्रति एकड़ 50 से 60 क्विंटल उपज ली जा सकती है।

बिजाई का समय: गर्मी की फसल की बिजाई फरवरी–मार्च तथा वर्षा ऋतु में जून जुलाई में की जानी चाहिए। बसंतकालीन उगाई गई भिण्डी की बाजार में ज्यादा मांग रहती है।

खेत की तैयारी: बिजाई से पहले खेत में गोबर खाद डालकर जुताई व पाटा लगाकर अच्छी प्रकार तैयार कर लें। इस समय भिण्डी की बिजाई डोलियों में भी कर सकते हैं।

उन्नत किस्में: व्ही.आर.ओ.–6,पद्मनी, संकर किस्में विजय, विशाल हाइब्रिड–7, विशाल हाइब्रिड–8, अर्का, अनामिका, पूसा मखमली भिण्डी की हिसार उन्नत, पी–7, वर्षा, उपहार तथा पूसा सावनी रोगरोधी एवं ज्यादा उपज देने वाली किस्में हैं। हिसार उन्नत तथा वर्षा उपहार किस्में बोने के 45 दिन बाद फल देना शुरू कर देती है।

बीज मात्रा : बीज दर 15–20 किलो प्रति हेक्टेयर सामान्य, संकर किस्म 6 किलो प्रति हेक्टेयर

बसंतकालीन भिण्डी के लिए 12 से 15 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ बोना चाहिए। बोने से पहले बीज को रातभर पानी में भिगोएं। बिजाई 30 सेंटीमीटर चौड़ी डोलियों में दोनों तरफ किनारों पर 10 सेमी की दूरी पर तथा वर्षा ऋतु में लाइन का फासला 45 से 60 तथा पौधे से पौधा 30 सेमी रखें।

संतुलित खाद एवं उर्वरक : बोते समय एक कट्टा डीएपी तथा 20 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ तथा 25 किग्रा यूरिया बोने के तीन सप्ताह बाद तथा 25 किग्रा. फल आने के समय दें।

- गोबर खाद 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर बुवाई
- नत्रजन 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 30 दिनों बाद
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 45 दिनों बाद
- स्फुर 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय

खरपतवार नियंत्रण : आवश्यकतानुसार निंदाई खरपतवार नियंत्रण 40 दिनों तक करें। एक सप्ताह के अंतराल पर 3 से 4 गुड़ाई पर्याप्त है। 20 से 35 दिन बाद निराई गुड़ाई करें। बिजाई से एक दिन पहले फलूक्लोरोलिन की 400 ग्राम मात्रा 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें तथा 3 से 4 सेमी. गहरी रेक कर देने से भी खरपतवार नियंत्रण हो जाता है।

सिंचाई : साप्ताहिक सिंचाई अनुशंसित है।

तुड़ाई : 45 से 50 दिनों बाद शुरू प्रति 2–3 दिनों के अंतराल में।

उपज : लगभग 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

अन्य उपयोग : गुड़ बनाते समय गुड़ साफ करने के लिए।

सावधानियां : कीटग्रसित फल तोड़कर भिण्डी में दवा दें तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह से करना चाहिए।

कीटनाशक दवा छिड़काव से पहले फल तोड़ लें तथा छिड़काव के बाद भी जब भिण्डी तोड़े उन्हें अच्छी प्रकार से पानी से धोकर ही खाएं या मंडी ले जाएं एवं फल तुड़ाई के समय मानव स्वास्थ्य हित मेलाथियान या डाईक्लोरमास जैसी सुरक्षित दवाओं का उपयोग करें।

कीट नियंत्रण : रस चूसक कीट जैसे हरा मच्छर, सफेद मक्खी, मोला, फुदका नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। लाल मकड़ी नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या डायकोफाल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से, फल छेदक इल्ली नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

जायद का हीरा खीरा

मिट्टी – लगभग सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। परन्तु इसकी सफलतापूर्वक खेती के लिये बलुई दोमट तथा मटासी मृदा उत्तम मानी जाती है।

उन्नत किस्में – पूसा संयोग, पाइनसेट, खीरा–90, टेस्टी, मालव–243, गरिमा सुपर, ग्रीन लॉग, सदोना, एन.सी.एच.–2, रागिनी, संगिनी, मंदाकिनी, मनाली, य.एस.–6125, यू.एस.–6125, यू.एस.–249।

बुवाई का समय व बीज दर – बुवाई का समय स्थान विशेष की जलवायु पर निर्भर करता है। वैसे गर्मी वाली फसल के लिये बीज की बुवाई फरवरी के मध्य से मार्च के पहले सप्ताह तक में करें। एक हेक्टेयर खेत के लिये 2.5 से 3.0 किग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज को उपचारित करने के लिये बीज को चौड़े मुंह वाले मटका में लेकर 2.5 ग्राम थाइरम दवा प्रति किलोग्राम बीज के दर से मिलाते हैं। दवा को बीज में अच्छी प्रकार मिलाने के लिये मटका में दवा व बीज को डालकर दोनों हाथों से कई बार ऊपर–नीचे करें जिससे दवा का आवरण बीज के चारों ओर लग जाये।

बोने की विधि – बुवाई के लिये अच्छी तरह से तैयार खेत में थाले तैयार कर लेते हैं इस थाला के चारों तरफ 2–4 बीज 2–3 सेन्टी मीटर गहराई पर बोयें। खीरे की बुवाई नाली में भी किया जाता है। इस फसल की बुवाई करने के लिये 60 सेन्टीमीटर चौड़ी नालियों का निर्माण करते हैं, जिनके किनारे पर खीरे के बीज की बुवाई की जाती है। दो नालियों के बीच की दूरी 2.5 मीटर रखें। इसके साथ ही एक बेल से दूसरे बेल के नीचे 60 सेन्टीमीटर का फासला भी रखें। ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये बीज की बुवाई करने से पूर्व 12–18 घण्टे तक पानी में भिगोकर रखें, इससे बीज का अंकुरण अच्छा होता है। बीज की बुवाई के लिये कतार से कतार की दूरी 1.0 मीटर व पौध से पौध की दूरी 50 सेन्टीमीटर रखें। खीरे के पौधे से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये इस फसल को सहारा देना आवश्यक है।

खीरा गर्मी की एक महत्वपूर्ण फसल है, जिसकी खेती गर्मी के अलावा बरसात के मौसम में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। आमतौर पर सलाद के रूप में उपयोग किये जाने वाले खीरे में इरेप्सिन नामक एन्जाइम पाया जाता है, जो प्रोटीन को पचाने में सहायक होता है। इसके अलावा खीरा पानी का अच्छा स्रोत है जिसमें लगभग 96 प्रतिशत पानी पाया जाता है। इसलिये खीरा गर्मी में तरावट देने वाली एक मुख्य सब्जी है। खीरा विटामिन ए, बी–1, बी–6, विटामिन–सी, विटामिन–डी के अलावा पोटेशियम, फास्फोरस व लोहा आदि का एक उत्तम स्रोत है। खीरे के जूस का नियमित सेवन करने से हमारा शरीर बाहर व अन्दर से मजबूत बनता है।

खाद व उर्वरक प्रबंधन – खीरे की एक हेक्टेयर खेत में खेती करने के लिये 30 टन गोबर खाद का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम यूरिया, 125 किग्रा. एन.पी.के., 30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश का उपयोग करें। फसल में फल लगने प्रारंभ हो जाये तो फसल पर एक या दो तुड़ाई के बाद एक प्रतिशत यूरिया के घोल का पौधों पर छिड़काव करने से पौधों की बढ़वार व फलत अधिक व लम्बे समय तक प्राप्त होती है। खीरे के पौधे से अधिक फल प्राप्त करने के लिये वृद्धि नियामक हार्मोन के प्रयोग से मादा फूलों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। जिसके लिये इथरेल 250 पी.पी.एम सान्द्रता वाले मिश्रण का घोल बनाकर, जब पौधों में दो पत्तियां वाले पौधे हो जाये तब छिड़काना चाहिये, जिससे खीरे के पौधों में मादा पुष्पों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। तथा अधिक फल लगने के कारण उपज बढ़ जाती है। 250 पी.पी.एम. का घोल बनाने के लिये आधा मिली. इथरेल/लीटर पानी में घोलना चाहिये।

सिंचाई – फसल में फूल आने की अवस्था में हर पांच दिन के अन्तर पर सिंचाई करें। जिन क्षेत्रों में सिंचाई जल की कमी हो वहां पर टपक सिंचाई लगायें।

इससे खेत में पर्याप्त नमी बनी रहती है, ह्यसाथ ही सिंचाई जल की आवश्यकता भी कम होती है।

कटाई व उपज – खीरे की फसल की अवधि 45 से 75 दिनों की होती है। जिससे लगभग 100 से 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। खीरे की बेमौसम फसल पाली हाउस में उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

अण्डा उत्पादन को कम करने वाले पोषण से जुड़े रोग

● अंचल केशरी ● रविंद्र कुमार जैन
● अशोक कुमार पाटिल ● नरेश कुरेचिया
anchalkeshri05@gmail.com

रिकेट्स

कैल्शियम, विटामिन डी 3 या फास्फोरस परिसंचरण की कमी या असंतुलन के कारण होता है। यह रोग तब होता है। जब इन पोषक तत्वों का असंतुलन या आहार कम हो जाता है। कुछ दवाएं और कवक विषाक्त पदार्थ भी रिकेट्स का कारण बन सकते हैं। इस रोग के परिणाम से हड्डियाँ सिकुड़ जाती है, जो अक्सर झुका हुआ होता है, जिससे पक्षियों की खड़े होने और चलने की क्षमता को सीमित करता है। अगर स्थिति जल्दी पकड़ी जाती है तो रिकेट्स का रोकथाम या इलाज किया जा सकता है। सामान्य हड्डी कैलिफिकेशन होने के लिए, कैल्शियम और फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति की जानी चाहिए और उन्हें एक-दूसरे के लिए सही अनुपात में आपूर्ति करने की भी आवश्यकता है (2:1)। विटामिन डी 3 महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कैल्शियम के अवशोषण को नियंत्रित करता है। माइकोटॉक्सिन मोल्ड या कवक द्वारा उत्पादित विषाक्त पदार्थ होते हैं और यह मुर्गियों पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं जिनमें पोषक तत्वों के अवशोषण के साथ हस्तक्षेप भी शामिल है। माइकोटॉक्सिन प्रेरित विकेटों का विषाक्त पदार्थ दूषित फीड को प्रतिस्थापित करके और सामान्य स्तर से तीन गुना विटामिन डी 3 देकर इलाज किया जा सकता है।

पिंजरा लेयर थकान

पिंजरा लेयर थकान को पोषण बीमारी के रूप में वर्णित किया जाता है और पिंजरों में रखी मुर्गियों की मृत्यु का एक प्रमुख कारण होता है। यह स्थिति आमतौर पर अधिकतम अंडे उत्पादन करने वाली मुर्गियों में होती है और यह ऑस्टियोपोरोसिस से भी जुड़ी हो सकती है, पिंजरा लेयर थकान एक ऐसी स्थिति है जो भंगुर हड्डियों का कारण बनती है। पिंजरा लेयर थकान का प्राथमिक कारण तन में कैल्शियम की कमी को माना जाता है, आमतौर पर उच्च उत्पादन के दौरान कैल्शियम के असंतुलित होता है। मुर्गियों को समय-समय पर कैल्शियम को सही अनुपात में खिलाने से मज्जा की हड्डियों में कैल्शियम की कमी नहीं होती है।

मुर्गियो के झुण्ड में तेजी से फैलने वाली विभिन्न रोगजनक एवं संक्रामक बीमारियां है। लेकिन कुछ पोषक तत्व और चयापचय संबंधी विकार भी हैं, यदि उनकी पहचान और उनके लक्षणों का इलाज नहीं किया जाता है। तो वे तुरंत झुंड के माध्यम से फैल जाएंगे।

अवशोषण के परिणामस्वरूप हो सकती है जो उत्पादन चरण के दौरान कैल्शियम अवशोषण या हड्डी कैलिफिकेशन को कम करती है। पिंजरा लेयर थकान से पीड़ित मुर्गियां अपने पैरों पर नियंत्रण खो देती हैं। आमतौर पर अंडा उत्पादन में कोई नुकसान नहीं होता है और न ही अंडे की परत की गुणवत्ता या अंडे की अंदर की गुणवत्ता में कोई कमी होती है। चूंकि फर्श में रखने वाली मुर्गियों की तुलना में पिंजरा की परतों में स्थिति अधिक प्रचलित है, इसलिए इस स्थिति को रोकने में व्यायाम अच्छी भूमिका निभाता है। अगर मुर्गियों को पिंजरों से हटा दिया जाये और फर्श पर सामान्य रूप से चलने दिया जाये तो मुर्गियां ठीक हो जाती हैं। पिंजरा लेयर थकान कई मुर्गियों के बजाय अकेली मुर्गी के पिंजरों में अधिक होता है क्योंकि दाना और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करते समय पिंजरे में मुर्गियों का व्यायाम

फैटी यकृत सिंड्रोम

मुर्गियों में उच्च उत्पादन अवधि के दौरान होने वाले सबसे महत्वपूर्ण चयापचय विकारों में से एक है। जिगर में अत्यधिक वसा से संबंधित रोग, झुंड में मृत्यु दर में वृद्धि, बीमारी का पहला संकेत है। कई कारक यकृत की कोशिकाओं में वसा की वृद्धि करते हैं जिसमें उच्च अंडे के उत्पादन, विषाक्त पदार्थ, पोषक असंतुलन, उच्च ऊर्जा आहार की अत्यधिक खपत, यकृत (लिपोट्रॉपिक एजेंट), अंत:स्रावी असंतुलन और आनुवांशिक घटकों से वसा को सक्रिय करने वाले पोषक तत्वों की कमी शामिल है। मुर्गियों में फैटी यकृत सिंड्रोम वसा की अत्यधिक संचय का परिणाम होता है जब लिपोप्रोटीन परिवहन बाधित हो जाता है। उस समय यकृत एवियन प्रजातियों में लिपिड संश्लेषण का मुख्य स्थल है। जो अंडे पैदा करने वाली मुर्गियों में बहुत सक्रिय है। फैटी यकृत सिंड्रोम मृत मुर्गियों की नेक्रोपसी से पता चलता है प्रभावित मुर्गियों के कॉम्ब्स भी पीले होते हैं। इसमें यकृत कोशिकाएं वसा वैक्यूल्स से से भरी होती हैं। पक्षियों के पेट की गुहा में बड़ी मात्रा में वसा पाया जाता है। फैटी यकृत सिंड्रोम तब होता है जब मुर्गिया सकारात्मक ऊर्जा संतुलन में होती हैं फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने के लिए आहार में संशोधन का उपयोग किया जाता है। पूरक वसा के साथ कार्बोहाइड्रेट को प्रतिस्थापित करने से आहार की ऊर्जा की वृद्धि नहीं होती है और यह फायदेमंद होता है। गेहूं और जौ जैसे अन्य अनाज के साथ मकई को बदलना अक्सर फायदेमंद होता है। मछली के भोजन, जई के हल और भोजन जैसे उत्पाद खिलाने से भी फैटी यकृत सिंड्रोम कम होता है। फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने का सबसे अच्छा तरीका पुरानी मुर्गियों में अत्यधिक सकारात्मक ऊर्जा संतुलन को रोकना है। संभावित समस्याओं को देखते हुए मुर्गियों के शारीरिक वजन पर नजर रखी जाती है। जब शरीर के वजन में वृद्धि देखी जाती है, तो आहार में बदलाव करके ऊर्जा के सेवन को प्रतिबंधित किया जाता है।

निष्कर्ष

रिकेट्स पिंजरा लेयर थकान और फैटी यकृत सिंड्रोम आहार सम्बंधित बीमारियां हैं जो मुर्गियां के उत्पादन को प्रभावित करती हैं और मुर्गियों के झुंड की मृत्यु दर के उच्च प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं। उत्पादन वाले मुर्गियों का आहार विशेष रूप से पूरा होना चाहिए, हालांकि, इन बीमारियों की घटनाएं विशेष रूप से उच्च उत्पादन के समय मुर्गियों में होती हैं वर्तमान में, पिंजरे प्रणालियों में वाणिज्यिक रूप से रखे हुए मुर्गियों कोऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारियों से बचाने के लिए बहुत कुछ किया जाता है। इस बीमारी को एक उत्पादन बीमारी माना जा सकता है एवं आहार में सुधार करके इनको कम किया जा सकता है। गेहूं का चोकर जैसे कम ऊर्जा फीडस्टफ के साथ कुछ मकई देकर फैटी यकृत सिंड्रोम का इलाज किया जा सकता है।

साहीवाल गाय और उसकी खासियत

साहीवाल नस्ल की गाय पाकिस्तान में साहिवाल जिले से उत्पन्न मानी जाती है। आज साहीवाल भारत और पाकिस्तान में सबसे अच्छा डेयरी नस्लों में से एक है।

शारीरिक विशेषताएं:

गहरा शरीर, ढीली चमड़ी, छोटा सिर व छोटे सींग इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं इसका शरीर साधारणत: लंबा और मांसल होता है। इनकी टांगें छोटी होती हैं, स्वभाव कुछ आलसी और इसकी खाल चिकनी होती है। पूंछ पतली और छोटी होती है।

यह गाय लाल और गहरे भूरा रंग की होती है कभी-कभी इसके शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे भी होते हैं। ढीली चमड़ी होने के कारण इसे लोग लोला भी कहते हैं।

नर साहिवाल के पीठ पर बड़ा कूबड़ होता है व इसकी ऊंचाई 136 सेमी और मादा की ऊंचाई 120 सेमी के आसपास होती है।

नर गाय का वजन 450 से 500 किलो और मादा गाय का वजन 300-400 किलो तक होता है।

साहीवाल गाय का दूध उत्पादन:

यह गाय 10 से 16 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है। अपने एक दुग्धकाल के दौरान ये गायें औसतन 2270 लीटर दूध देती हैं। साथ ही इसके दूध में पर्याप्त वसा होता है। ये विदेशी गायों की तुलना में दूध कम देती हैं, लेकिन इन पर खर्च भी काफी कम होता है। साहीवाल की खूबियों और उसके दूध की गुणवत्ता के चलते वैज्ञानिक इसे सबसे अच्छी देसी दुग्ध उत्पादक गाय मानते हैं। इनकी कम होती संख्या से चिंतित वैज्ञानिक ब्रीडिंग के जरिये देसी गायों की नस्ल सुधार कर उन्हें साहीवाल में बदलने पर जोर दे रहे हैं, जिसके तहत देसी गाय की पांचवीं पीढ़ी पूर्णत: साहीवाल में बदलने में कामयाबी हासिल हुई है।

साहीवाल गाय की अन्य विशेषता:

इसका शरीर गर्मी, परजीवी और किलनी प्रतिरोधी होता है जिससे इसे पालने में अधिकम मशक्कत नहीं करनी पड़ती है और डेरी किसानों को पालने में बहुत फायदा होता है।

इस गाय की अन्य विशेषताएं हैं:-

- उच्च दूध की पैदावार
- प्रजनन की आसानी ● सूखा प्रतिरोधी
- अच्छा स्वभाव अच्छी देखभाल करने पर ये कहीं भी रह सकती हैं।

गर्मी सहने की अच्छी क्षमता और उच्च दुग्ध उत्पादन के कारण इन गायों को एशिया, अफ्रीका और कई कैरेबियाई देशों में भी निर्यात किया गया है।

- मुख्यत: पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, बिहार व मध्यप्रदेश में पाया जाता है।
- दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में 1350 किलोग्राम
- व्यावसायिक फार्म की स्थिति में - 2100 किलोग्राम
- प्रथम प्रजनन की उम्र 32-36 महीने
- प्रजनन की अवधि में अंतराल -15 महीने।

कहां मिलेगी : करनाल, अबोहर, हिसार के क्षेत्र में।

कृषक कल्याण वर्ष-2026

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव का अभ्युदय मध्य प्रदेश

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश'

किसानों की आय में हर तरीके से वृद्धि करना ही हमारा मूल लक्ष्य है और यह उनकी फसल का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने से ही संभव है। मध्यप्रदेश के एक करोड़ से अधिक किसानों के हित में 'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश' के समावेशी मॉडल पर वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष - कृषि वर्ष के रूप में मना रहे हैं। इस दौरान कृषि उत्पादों का मजबूत विपणन तंत्र बनाया जाएगा, साथ ही खाद्य प्रसंस्करण को भी बढ़ावा दिया जाएगा। किसानों को उच्च उत्पादकता वाली फसल किस्मों का वितरण, डिजिटलीकृत एवं नवीन कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा, प्राकृतिक एवं जैविक खेती को प्रोत्साहन, कृषि स्टार्टअप एवं एफपीओ को बढ़ावा, कृषि से संबद्ध सभी क्षेत्रों को एकीकृत करते हुए जिला-आधारित क्लस्टर्स का विकास तथा खेती-किसानी में फसल चक्र में विविधीकरण को प्रोत्साहन देना कृषि वर्ष के प्रमुख लक्ष्य तय किए गए हैं।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मप्र राज्य में कृषि वर्ष 2026 का कैलेण्डर

जनवरी

● नर्मदापुरम में कृषि आधारित कौशल विकास, कस्टम हायरिंग केन्द्रों का राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन ● मंदसौर में सोयाबीन भावांतर भुगतान समापन, सोयाबीन के साथ मूंगफली, सरसों को योजना में शामिल करने के लिए विस्तार कार्यक्रम ● भोपाल में गुलाब महोत्सव।

फरवरी

● डिण्डौरी,उमरिया,मण्डला में कोदो-कुटकी बोनस वितरण कार्यक्रम में मिलेट मेला, रोड शो, फूड फेस्टिवल, बायर-सेलर मीट और सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन ● निमाड़-मालवा क्षेत्र में राज्य स्तरीय एग्रीस्टेक एवं डिजिटल कृषि प्रदर्शनी ● उज्जैन में गुलाब महोत्सव ● भोपाल में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग समागम ● ग्वालियर कृषि विश्वविद्यालय में कृषि, उद्यानिकी, मत्स्य, पशुधन और अन्य कृषि संबंधी क्षेत्रों में नवीन संभावनाओं पर कृषि मंथन और कृषि मेले का आयोजन ● उज्जैन में राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन।

मार्च

● प्राकृतिक खेती पर भोपाल में राष्ट्रीय संगोष्ठी, राज्य स्तरीय ट्रेड फेयर तथा बायर-सेलर मीट ● संभाग स्तर पर भी प्राकृतिक खेती पर प्रदर्शनियां और सेमिनार होंगे ● ग्वालियर में दुग्ध उत्पादकों का सम्मेलन ● प्रत्येक दुग्ध संघ स्तर पर सम्मेलन ● इंदौर में पशुपालन पर कार्यक्रम।

अप्रैल

● जबलपुर में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग समागम।

मई

● सिवनी में धान महोत्सव, राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन ● इंदौर, जबलपुर में कुक्कुट पालकों व उद्यमियों का सम्मेलन ● इंदौर में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग समागम।

जून

● भोपाल में राज्य स्तरीय आम महोत्सव ● उज्जैन में राज्य स्तरीय कृषि उपज निर्यात प्रोत्साहन कार्यशाला ● सागर में राज्य स्तरीय सोया महोत्सव तथा किसान सम्मेलन ● इंदौर, उज्जैन और विदिशा में भी संभागीय आयोजन होंगे ● उन्नत पशुपालन के लिए पशुपालकों/शासकीय प्रतिनिधियों का ब्राजील भ्रमण प्रस्तावित ● अलीराजपुर में जिला स्तरीय आम महोत्सव ● जबलपुर में राज्य स्तरीय सिंघाड़ा/ मखाना महोत्सव।

जुलाई

● खरगोन, बड़वानी, धार, अलीराजपुर, खण्डवा पांढुर्ना तथा मालवांचल के जिलों में कपास और मिर्च महोत्सव तथा किसान सम्मेलन ● नर्मदापुरम में कृषि आधारित कौशल विकास एवं कस्टम हायरिंग राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन ● मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर में अन्तर्देशीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर कार्यक्रम ● बैतूल में जिला स्तरीय आम महोत्सव ● नर्मदापुरम में सिंघाड़ा और मखाना महोत्सव।

अगस्त

● इंदौर में राज्य स्तरीय एफपीओ सम्मेलन तथा प्रदर्शनी ● भोपाल में राज्य स्तरीय केन्द्रीय गुणवत्ता प्रयोगशाला का लोकार्पण ● राज्य के समस्त दुग्ध संघों के अंतर्गत 'सांची है तो शुद्ध है' अभियान ● भोपाल में 16 करोड़ रूपए लागत की दुग्ध उत्पादन निर्माण डेयरी का लोकार्पण।

सितम्बर

● छिंदवाड़ा में कृषि अवसंरचना निधि योजना में लाभान्वित हितग्राहियों की राज्य स्तरीय कार्यशाला। ● सागर और रतलाम में एफपीओ सम्मेलन तथा स्किल डेवलपमेंट वर्कशॉप और क्रेडिट लिंकेज सेमिनार ● उज्जैन में प्रदेश में उत्कृष्ट कार्य करने वाले मैदानी कार्यकर्ताओं और पशुपालकों का सम्मान ● बालाघाट में सिंघाड़ा एवं मखाना महोत्सव।

अक्टूबर

● भोपाल में पराली (फसल अवशेष) प्रबंधन पर कार्यशाला, जिला स्तर पर भी होंगे सम्मेलन ● छिंदवाड़ा में एफपीओ सम्मेलन ● मंडी बोर्ड तथा निजी संस्थाओं के साथ बायर-सेलर मीट ● इंदौर में जलीय कृषि विपणन संगोष्ठी ● नर्मदापुरम् में कृषि आधारित कौशल विकास और कस्टम हायरिंग पर राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन ● इंदौर में राज्य स्तरीय सब्जी महोत्सव जिला स्तर पर भी कार्यक्रम ● जबलपुर में राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन।

नवम्बर

● नरसिंहपुर में राज्य स्तरीय गन्ना महोत्सव ● राजगढ़ में जिला स्तरीय सब्जी महोत्सव ● भोपाल में राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन ● मंडी आधुनिकीकरण, ग्रेडेड और पैक्ड उपज।

किसान सम्मान निधि

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को तीन किस्तों में सालाना 6,000 रुपये मिलते हैं। साथ ही म.प्र. के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना जोड़कर राज्य सरकार की तरफ से प्रदेश के किसानों को प्रति वर्ष तीन किस्तों में दो-दो हजार अर्थात् 6 हजार रुपये दिए जा रहे हैं।

मध्य प्रदेश में बढ़ता सिंचाई का क्षेत्र

प्रदेश में वर्तमान में सिंचित रकबा लगभग 55 लाख हेक्टेयर है। अगले 1 वर्ष में 65 लाख हेक्टेयर तक तथा वर्ष 2029 तक 100 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य है।

- **केन-बेतवा लिंक परियोजना :** परियोजना से प्रदेश के छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, निवाड़ी, दमोह, शिवपुरी, दतिया, रायसेन, विदिशा और सागर जिलों में कुल 8.11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में मिलेगी सिंचाई सुविधा।
- **पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना :** प्रदेश के मालवा क्षेत्र के 11 जिले गुना, शिवपुरी, सीहोर, देवास, राजगढ़, उज्जैन, आगर-मालवा, इंदौर, शाजापुर, मंदसौर एवं मुरैना में 6.13 लाख हेक्टे. क्षेत्र में मिलेगी सिंचाई सुविधा।

उद्यानिकी को बढ़ावा

- 2019-20 में उद्यानिकी का रकबा 21.75 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 28.39 लाख हेक्टेयर हुआ। वहीं उत्पादन 317.36 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 425.68 लाख मीट्रिक टन हो गया।
- 16 उद्यानिकी उत्पादों का जीआई टैग के लिए पंजीयन।
- मखाना क्षेत्र विस्तार प्रदेश के 4 जिले नर्मदापुरम्, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट में किया जा रहा है।
- 45 हजार हेक्टेयर में फूलों की खेती।

पशुपालन

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना प्रदेश में लागू।
- गौशालाओं को प्रति गौ-वंश 40 रुपए देने का निर्णय।
- 25 दुधारू पशुओं की डेयरी इकाई स्थापना पर 42 लाख की सीमा।
- घायल गायों को इलाज के लिए हाइड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग वाहन की व्यवस्था।
- गौशालाओं को श्रेष्ठ संचालन के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

D-16153/25

भावांतर

ट्रैक्टर रैली

अन्नदाता सम्मान समारोह

शुभारम्भ

पुष्प महोत्सव

गौसेवा

कड़कनाथ झाबुआ की पहचान

ओडीओपी से राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पहचान की संभावनाएं : डॉ. खाड़े

झाबुआ (कृषक जगत)। एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) योजना के तहत झाबुआ जिले का चयनित एवं विशिष्ट उत्पाद कड़कनाथ है। इसी क्रम में इंदौर संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े एवं कलेक्टर नेहा मीना ने शासकीय कड़कनाथ कुक्कुट फार्म, झाबुआ का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त द्वारा फार्म में संचालित कड़कनाथ अंडा हैचरी, हेचरी मशीन, चूजों के बाड़े एवं मुर्गों के बाड़े का गहन अवलोकन किया गया। उन्होंने हैचरी मशीन की कार्यप्रणाली, अंडों से चूजों के उत्पादन प्रक्रिया, तापमान एवं स्वच्छता व्यवस्था, चूजों की देखभाल तथा कड़कनाथ मुर्गियों के पालन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

झाबुआ

इस दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री जितेन्द्र सिंह चौहान, अपर कलेक्टर श्री सी.एस. सोलंकी, सहायक कलेक्टर श्री आशीष कुमार, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व झाबुआ श्री भास्कर गाचले, उप संचालक पशुपालन विभाग डॉ. ए. एस. दिवाकर एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण विभाग की योजनाएं

फल पौधरोपण

योजना : फल पौधरोपण योजना

पात्रता मापदण्ड : योजनान्तर्गत कृषकों की निजी भूमि एवं सिंचाई सुविधा की उपलब्धता के आधार पर कृषकों द्वारा ड्रिप सहित/रहित उच्च/अति उच्च घनत्व के फल पौध रोपित करने पर इकाई लागत का 40 प्रतिशत अतुदान 3 वर्षों में देय है। योजना के अंतर्गत न्यूनतम 0.25 हेक्टेयर एवं अधिकतम 4.00 हेक्टेयर के लिये अनुदान देय है।

आवेदन कैसे करें : MPFSTS पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन।

लाभ की राशि : निर्धारित इकाई लागत का 40 प्रतिशत अनुदान देय है।

लाभ राशि के वितरण की आवृत्ति : 60:20:20

नोडल अधिकारी : संबंधित जिला अधिकारी

मसाला क्षेत्र विस्तार

योजना: मसाला क्षेत्र विस्तार योजना

पात्रता मापदण्ड : योजनान्तर्गत कृषकों की निजी भूमि एवं सिंचाई सुविधा की उपलब्धता के आधार पर बीजीय मसाला फसलों और जड़ एवं प्रकंद वाली फसलों पर योजना के अंतर्गत न्यूनतम 0.25 हेक्टेयर एवं अधिकतम 2 हेक्टेयर के लिये अनुदान देय है।

आवेदन : MPFSTS पोर्टल पर ऑनलाइन

लाभ की राशि : बीज वाली मसाला फसलों में इकाई लागत का सामान्य वर्ग में 50 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति वर्ग में 70 प्रतिशत अनुदान देय है।

लाभ राशि के वितरण की आवृत्ति : बीज मसाला फसलों में सामान्य वर्ग के लिए बीज की लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 10 हजार रुपये तथा अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के लिए 14 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर, जो भी कम होगा, अतुदान देय है। जड़ एवं कंद/प्रकंद वाली व्यावसायिक फसल के लिए सामान्य वर्ग में रोपण सामग्री की लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 50 हजार रुपये तथा अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के लिये 70 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर, जो भी कम होगा, अनुदान देय है।

नोडल अधिकारी : संबंधित जिला अधिकारी

व्यावसायिक उद्यानिकी फसलों की संरक्षित खेती की प्रोत्साहन योजना

योजना: व्यावसायिक उद्यानिकी फसलों की संरक्षित खेती की प्रोत्साहन योजना

पात्रता मापदण्ड : योजनांतर्गत कृषकों की निजी भूमि एवं सिंचाई सुविधा की उपलब्धता के आधार पर पॉली हाउस/शेडनेट हाउस निर्माण पर योजनांतर्गत अधिकतम 4 हजार वर्गमीटर तथा प्लास्टिक मल्चिंग पर अधिकतम 2 हेक्टेयर तक अनुदान देय है।

आवेदन कैसे करें : MPFSTS पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन

लाभ राशि: निर्धारित इकाई लागत का 50 प्रतिशत अनुदान देय है।

लाभ राशि के वितरण की आवृत्ति : योजनांतर्गत सामान्य, अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति वर्ग के कृषकों को घटक में निम्नानुसार अनुदान दिया जाता है -

स्त्रोत : जनसंपर्क विभाग म.प्र. के प्रकाशन 'नई राहें नए अवसर' से उद्धृत।

ओलावृष्टि से खराब हुई फसल का सर्वे प्रारंभ

उज्जैन (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री रोशन कुमार सिंह ने बताया कि गत दिनों आंधी-तूफान ओलावृष्टि से कारण फसलों को हुए नुकसान का सर्वे प्रारंभ कर दिया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर राजस्व विभाग के द्वारा उज्जैन जिले में फसल नुकसान का आकलन करने के लिए सर्वे प्रारंभ कर दिया गया है। इसके संबंध में सभी तहसीलदार, आरआई, पटवारी को निर्देश दिए गए हैं कि वह गांव-गांव में जाकर फसलों को हुए नुकसान का सर्वे प्रारंभ कर दें।

उज्जैन

प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना में 222 सोलर पंप स्वीकृत

शहडोल (कृषक जगत)। मप्र शासन के नवकरणीय ऊर्जा विभाग, भोपाल के निर्देशानुसार किसानों को प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना (कुसुम बी) से लाभान्वित करने के उद्देश्य से प्रदेश के समस्त जिलों में नवकरणीय ऊर्जा कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शहडोल जिले में ऊर्जा विकास निगम कार्यालय शहडोल में आयोजित नवकरणीय ऊर्जा कैंप के दौरान कुसुम ब के राज्य पोर्टल पर AIF का आवेदन करवाया गया एवं किसानों का खाता नोडल बैंक में खुलवाया गया। प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना अंतर्गत जिले में 222 सोलर पंप स्वीकृत किए गए। जिला अक्षय ऊर्जा अधिकारी शहडोल श्री नवनीत राठिया ने योजना की जानकारी देते हुए बताया कि प्रधानमंत्री कुसुम बी योजना के माध्यम से किसानों को सोलर पंप लगाने हेतु अनुदान प्रदान किया जा रहा है। इस योजना में किसानों को केवल 10 प्रतिशत अंशदान देना होगा, शेष 30 प्रतिशत केंद्रीय अनुदान एवं 60 प्रतिशत राज्य अनुदान के रूप में प्रदान किया जाएगा। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को ऑनलाइन आवेदन, सब्सिडी प्राप्त करने की प्रक्रिया तथा तकनीकी पहलुओं की जानकारी भी दी गई। आयोजित कैंप में ब्रांच मैनेजर श्री पवन कुमार वर्मा, अभियंता श्री शर्मा सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कामयाबी किसान की कहानी

गुलाब की खेती ने महकाई नितिन की जिंदगी

(दिलीप दसौंधी, कृषक जगत, मंडलेश्वर)। खरगोन जिले के महेश्वर निवासी श्री नितिन मालाकार उन लोगों के लिए प्रेरणादायक हैं, जो स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। नितिन ने करीब एक लाख रु प्रति माह की नौकरी छोड़कर गुलाब की खेती में सफलता हासिल करके यह साबित कर दिया है, कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो, तो खेती से भी सफलता और सम्मान पाया जा सकता है।

श्री मालाकार ने कृषक जगत को बताया कि वे फूल माली समाज से हैं। इनके पिता फूलों की खेती कर फूल-माला बेचने का परंपरागत व्यवसाय करते थे। 2006 में जबलपुर से इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन में बीई की डिग्री हासिल कर करीब 12 वर्षों तक अलीबाग (मुंबई) में JSW कंपनी में डिप्टी मैनेजर (इंजीनियर) के पद पर नौकरी की। मासिक वेतन लगभग 95 हजार रुपये था। नौकरी के दौरान पुणे के पास तलेगांव-दभाणे में करीब 200 एकड़ में फूलों की खेती देखने के बाद मन में विचार आया कि क्यों न पुश्तैनी व्यवसाय खेती को ही आधुनिक तरीके से आगे बढ़ाया जाए। इसी विचार के साथ महेश्वर लौटे और वर्ष 2020-21 में महेश्वर में 1 एकड़ (लगभग 4000 वर्ग मीटर) भूमि पर पॉली हाउस निर्माण कर गुलाब की खेती शुरू की। इसके पूर्व उन्होंने मप्र उद्यानिकी विभाग से गुलाब की खेती की जानकारी प्राप्त की तथा नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड में ऑनलाइन आवेदन किया। इन्होंने मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक से 40 लाख रुपये का ऋण प्राप्त किया, जिसमें उन्हें 28 लाख रुपये की सब्सिडी भी मिली। पॉलीहाउस में उन्होंने पहले लाल गुलाब के 32 हजार पौधे लगाए। फिर हर वर्ष नई किस्म के अलग-अलग रंग के फूलों के 2-2 हज़ार पौधे लगाते रहे। आज उनके पास हॉलैंड की उन्नत किस्मों जैसे- जुमेलिया, व्हाइट अविलोंचे, रिवाइवल और टॉप सीक्रेट प्रजाति के गुलाब के हज़ारों पौधे लहलहा रहे हैं।

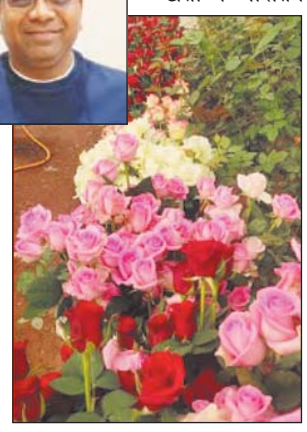

श्री मालाकार ने बताया कि गुलाब की इस खेती में औसतन 1700 से 1800 स्टेम का प्रतिदिन उत्पादन मिलता है। लूज फूल 150-200 रु किलो और 20 स्टेम (कली) का बंच 90-100 रु में बिकता है। वेलेंटाइन डे पर मांग बढ़ने के साथ ही रेट भी बढ़ जाते हैं। स्टेम बंच के रेट 150 से 200 रु तक हो जाते हैं। उत्पादित फूलों की बिक्री स्थानीय बाज़ार, खरगोन, धार और इंदौर के अलावा जयपुर मंडी से लेकर निर्यात बाज़ार तक है। श्री मालाकार ने बताया कि गुलाब की इस खेती में फसल के संरक्षण के लिए उर्वरक और कीटनाशक आदि पर करीब 80 हज़ार रु प्रति माह खर्च आता है। पॉली हाउस में सहयोग के लिए स्थानीय स्तर पर 4 से 5 लोगों को स्थायी रोजगार भी दिया है। इन सबके बावजूद नितिन को इस आधुनिक खेती से 12 से 15 लाख रुपये तक का वार्षिक शुद्ध मुनाफा हो रहा है। गुलाब की खेती ने नितिन की ज़िंदगी को महका दिया है। नितिन मालाकार की यह कामयाबी की कहानी उन किसानों और युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है, जो तकनीक, सरकारी योजनाओं और आत्मनिर्भर सोच के साथ खेती को एक लाभकारी एवं रोजगारपरक व्यवसाय बनाने का इरादा रखते हैं।

समस्या -समाधान

समस्या– सरसों फसल में पौध संरक्षण के हिसाब से वर्तमान में क्या कार्य करें विस्तार से बतायें।

– मनमोहन मौर्य

समाधान– सरसों की फसल वर्तमान में फूल–फली की अवस्था में चल रही है इस मौके पर कीट/रोग के आक्रमण पर निरीक्षण और उपाय तत्परता से किया जाना जरूरी होगा। आप निम्न बातों पर ध्यान दें।

- निचली पत्तियों पर यदि लाल रंग के किनारे दिख रहे हों तो इसे जिंक की कमी मानकर एक छिड़काव 1 किलो जिंक के साथ 5 किलो यूरिया 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- पत्तियों में यदि सफेद फफोले दिखाई दे रहे हों तो 600 ग्राम डाईथेन एम 45 250–300 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इस छिड़काव से पत्तियों पर आने वाले अन्य रोगों को भी रोका जा सकता है।
- माहो की रोकथाम बहुत ही जरूरी है इसके लिये 250 से 400 मि.ली. मेटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. इतने ही लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़कें।

समस्या– चने की इल्ली का प्रकोप आने लगा है, कौन सी दवा डालें कृपया बतायें।

समाधान– चने की इल्ली से निपटने के लिये एकीकृत–नाशीजीव प्रबंधन (आई.पी.एम.) को बनाया गया जो निम्नानुसार है। जिसे हर कृषक यदि अंगीकृत कर ले तो चने की इल्ली कोई समस्या नहीं रह पायेगी।

- गहरी जुताई तथा मेढ़ों की सफाई।
- चने की बुआई अक्टूबर 15 तक करें।
- मिश्रित फसल लगायें, जौ तथा सरसों की एक कतार साथ दो कतार चने की लगायें।
- अफ्रीकन गेंदा को चने के फसल में कतारों के बीच तथा आसपास लगायें।
- खेत में एक हेक्टर में 20–25 टी आकार की खूटियां भी लगायें।
- फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करें।
- घेटी अवस्था पर 2–3 इल्ली 1 मीटर कतार में आने पर 50 मि.ली. फेनवलरेट 20 ई.सी. या 50 मि.ली. साइपरमेथ्रिन 25 ई.सी. को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इसके अलावा प्रोफेनोफास 50 ई.सी. 2 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

समस्या– मैं अपने बगीचे में बेर के पौधे लगाना चाहता हूं, अच्छी पौध कहां मिलेगी, अन्य जानकारी भी दें।

– अभय वर्मा

समाधान – बेर एक सहिष्णु पौधा है कम पानी, खराब भूमि में भी पनप जाता है बेर में अनेक प्रकार के पौष्टिक पदार्थ पाय जाते हैं आमतौर पर सभी इसका उपयोग करते हैं आप निम्न तकनीकी अपनायें।

- साधारण भूमि का चुनाव भी इसके लिये किया जा सकता है।

- पौधों की रोपाई पौध से पौध 10 मीटर दूरी पर की जाती है। 60×60×60 से.मी. के गड्ढे तैयार कर गोबर खाद डालें। संपर्क करें–
- उप संचालक, उद्यानिकी विभाग, बुरहानपुर

समस्या– गेहूं में सूक्ष्म तत्व जस्ते की कमी के क्या लक्षण होते हैं कैसे उपचार किया जाये।

– सुभाष यादव

समाधान– गेहूं तथा धान पर जिंक की कमी के लक्षण समान रूप से देखे जा सकते हैं।

- फसल में जिंक की कमी के लक्षण पहली सिंचाई के उपरांत कल्ले निकलते वक्त देखे जा सकते हैं।
- ऊपर से तीसरी पत्तियों पर सफेद/तांबिया रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।
- प्रभावित पत्तियां बीच से सिकुड़ जाती हैं। पौधों का विकास अवरोधित हो जाता है। लगातार तापमान कम रहने की स्थिति में प्रकोप बढ़ जाता है। उपचार के लिये निम्न उपाय करें।
- 15–25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर की दर से डालें। एक साल का उपचार का असर दो वर्ष रहता है।
- खड़ी फसल में छिड़काव के लिये एक हेक्टर क्षेत्र के लिये 5 किलो जिंक सल्फेट और 2–5 किलो बुझा हुआ चूना 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- जिंक सल्फेट और चूना अलग–अलग कम पानी में घोले छानकर हजार लीटर पानी में मिलायें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

प्राकृतिक खेती – अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

रिसोर्स और सपोर्ट

क्रॉप विविधता क्या है?

क्रॉप डाइवर्सिफ़िकेशन या फसल विविधता किसी दिए गए खेती वाले इलाके में, फसल चक्र और/या संगठित होकर एक से ज़्यादा किस्में उगाने का तरीका है।

मिट्टी में न्यूनतम गड़बड़ी का क्या मतलब है?

प्राकृतिक खेती में मिट्टी तैयार करते समय अपनाई जाने वाली क्रियाएं जो मिट्टी में गड़बड़ी को कम करती हैं।

मिट्टी में कम से कम गड़बड़ी कैसे की जा सकती है?

इसे इन तरीकों से किया जा सकता है

– कम जुताई के तरीके (जैसे जुताई, हैरो चलाना, और सभी जुताई के काम जो आमतौर पर बीज के अंकुरण के लिए मिट्टी तैयार करने के लिए किए जाते हैं।

– सीधे बीज बोना।

– प्राकृतिक खाद का सीधा इस्तेमाल।

व्हाप्सा क्या है?

यह वह स्थिति है जहाँ दो मिट्टी के कणों के बीच की जगह में हवा और पानी के अणु दोनों मौजूद होते हैं। यह मिट्टी की सूक्ष्म जलवायु है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी ज़्यादातर नमी और कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं।

मल्चिंग या पलवार क्या है?

मल्चिंग या पलवार का मतलब है मिट्टी की सतह को जिंदा फसलों और पुआल (मरे हुए पौधों का बायोमास) दोनों का इस्तेमाल करके ढंकना।

पलवार कितने तरह की होती है?

पलवार दो तरह की होती है–

फसल के बचे हुए हिस्से की पलवार : कटाई के बाद बची हुई फसल की चीज़ें जैसे सूखे पत्ते, पुआल, छोटी टहनियाँ वगैरह मिट्टी को ढंकने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं।

जीवित पलवार : लाइव पलवार में मुख्य फसल की लाइनों में कम समय वाली फसलों के बहु फसली/अंतरवर्तीय बनाए जाते हैं। उदाहरण – गेहूं/ चावल (पोटाश, फॉस्फेट और सल्फर जैसे पोषण देते हैं) को दालों (नाइट्रोजन-स्थापन पौधे) के साथ लगाना।

बहुफसली खेती क्या है?

मल्टी-क्रॉपिंग का मतलब है एक ही ज़मीन पर एक साथ दो या दो से ज़्यादा फसलें उगाना।

खेती में केंचुआ क्या भूमिका निभाता है?

केंचुए जैव अपघटन वाली चीज़ों को खाते हैं और उन्हें अच्छी खाद में बदल देते हैं। केंचुए मिट्टी को जोतते हैं और मिलाते हैं। उनकी सुरंग बनाने की प्रक्रिया मिट्टी को ढीला करती है ताकि पानी और न्यूट्रिएंट्स नीचे जा सकें।

कृषक जगत

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक
रु. 95
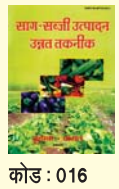
कोड : 016

सब्जियों में पौध संरक्षण
रु. 75

कोड : 017

मशरूम एक लाभ अनेक
रु. 45

कोड : 019

मिर्च की उन्नत खेती
रु. 55
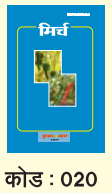
कोड : 020

केला उत्पादन
रु. 70

कोड : 025

गुलाब
बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 75

कोड : 027

पपीता
रु. 55

कोड : 031

अदरक
रु. 55

कोड : 032

फलों की खेती
रु. 75

कोड : 040

सजाएं फूलों से बगिया
रु. 65

कोड : 041

घर की बगिया
रु. 95

कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____

जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____

संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

स्वास्थ्य/शिक्षण

'पालक' बच्चों की सेहत के लिए फायदेमंद

शायद आपके बच्चों को भी पपई द सेलर मैन जैसे कॉर्टून से पालक खाने की प्रेरणा मिली हो। पालक को खाते ही उसमें गजब की शक्ति आ जाती है। अगर आदत नहीं तो आज ही अपने बच्चे को पालक खाने की आदत डालें। जी हां पालक को आयरन का पावरहाउस कहा जाता है। लेकिन क्या आप जानते है कि पालक में कैलोरी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, फाइबर और मिनरल तत्व होता हैं। साथ ही पालक में विभिन्न मिनरल तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन तथा विटामिन ए, बी, सी आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाते हैं। इसलिए इसमें मौजूद यह सभी तत्व बढ़ते बच्चों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। आइए जानें पालक बच्चों की सेहत को किस तरह फायदेमंद होता है।

हड्डियां और मसल्स बनती हैं मजबूत

कैल्शियम, मैग्नेशियम और फोस्फोरस से भरपूर पालक हड्डियों के लिए फायदेमंद है। यह हड्डियों को स्वस्थ बनाने के साथ मजबूत बनाता है। इसके अलावा पालक विटामिन के का एक बहुत अच्छा स्त्रोत है, जो हड्डियों में कैल्शियम को बनाए रखने में मदद करता है। आयरन के साथ–साथ इसमें प्रोटीन के साथ एमिनो एसिड भी पाया जाता है। जो किसी भी हाई प्रोटीन फूड से बेहतर होता है।

इम्यूनिटी को बेहतर बनाए

मल्टीविटामिन पालक में सभी तरह के खास विटामिन पाए जाते है। जिससे बच्चे का इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है। इतना ही नहीं, पालक विटामिन के का सबसे अच्छा स्त्रोत है। और इसमें पाया जाने वाला बीटा कैरोटिन के कारण इसके सेवन से बच्चों का पाचनतंत्र मजबूत होता है और यह भूख बढ़ाने में सहायक होता है। अगर आपका बच्चा खाना खाने में अनाकानी करता है तो उसे आज से ही पालक खाने को दें।

आंखों के लिए अच्छा

अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की आंखों पर चश्मा न लगें तो उसके आहार में पालक को शामिल करें। पालक बच्चों की आंखों के लिए बेहद अच्छा होता है इसमें विटामिन ए और ल्यूटिन जैसे पोषक तत्व मौजूद होते है। विटामिन ए कॉर्निया की रक्षा करने में मदद करता है और ल्यूटिन पराबैंगनी प्रकाश से आंखों की रक्षा करता है।

डिहाइड्रेशन से बचाए

छोटे बच्चों में पानी की कमी बड़े बच्चों की तुलना में ज्यादा पाई जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि वे बड़े की तुलना में ज्यादा जल्दी तरल पदार्थ खोते हैं। और पालक में पानी की मात्रा लगभग 90 प्रतिशत होती है और यह प्राकृतिक तरल पदार्थ से भरा होता है। इसी वजह से यह बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचाता हैं।

मस्से से पायें छुटकारा

मस्से विषाणु संक्रमण से पैदा होते हैं। प्रायः मानव पेपिल्लोमैविरस् नामक विषाणु की कोई प्रजाति इसका कारण होती है। लगभग दस प्रकार के मस्से होते हैं। मस्से संक्रमण से हो सकते हैं और शरीर में वहाँ प्रवेश करते हैं जहाँ त्वचा कटी–फटी हो। प्रायः ये कुछ माह में स्वयं समाप्त हो जाते हैं किन्तु कभी–कभी वर्षों तक बने रह सकते हैं या पुनः हो सकते हैं। शरीर पर अनचाहे मस्सों के उग जाने से मन से बार–बार यही आवाज आती है कि इन मस्सों से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है। ये मस्से आपकी सुंदरता में धब्बा बन कर आपको परेशान कर रहे हैं तो इन आसान उपायों की सहायता से आप इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

● रोज दो–तीन बार प्याज का लेप मस्सों पर करने से ये मस्से जड़ से खत्म हो जाएंगे। प्याज को काट कर मस्से पर घिसना भी लाभप्रद है। ● शरीर की त्वचा पर यदि छोटे–छोटे काले मस्से हो गए हों तो उन पर काजू के छिलकों का लेप लगाने से मस्से साफ हो जाते हैं।

● चूना और घी एक समान मात्रा में लेकर दोनों को खूब फेंटकर सुरक्षित रखें। उसे दिन में 3–4 बार मस्सों पर लगाएं। उससे मस्से जड़ से हट जाएंगे और दोबारा नहीं होंगे।

● सोडा कास्टिक 6 ग्राम को 250 ग्राम की बोतल में घोलकर सुरक्षित जगह पर रख दें। सावधानी से रूई की सहायता से मस्सों पर लगाएं।

मस्सों को दूर करने के लिए यह रामबाण दवा है।

● बी काम्पलेक्स, विटामिन ए, सी, ई युक्तआहार के सेवन से मस्सों को दूर किया जा सकता है। मस्सों से छुटकारा पाने के लिए पोटेशियम बहुत लाभदायक है। पोटेशियम बहुत सी साग–सब्जी और फलों में पाया जाता है। जैसे सेब केला, अंगूर, आलू, मशरूम, टमाटर, पालक इत्यादि।

● खट्टी सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्सों के छोटे–छोटे टुकड़े होकर गिर जाएंगे।

● मुहासे या मस्से हों तो फ्टिकरी और काली मिर्च आधा–आधा ग्राम पानी में पीसकर मुहा पर मलने से लाभ होता है।

● बरगद के पेड़ के पत्तों का रस मस्सों के उपचार के लिए बहुत ही असरदार होता है। इस प्रयोग से त्वचा सौम्य हो जाती है और मस्से अपने आप गिर जाते हैं।

● एक चम्मच कोथमीर के रस में एक चुटकी हल्दी डालकर सेवन करने से मस्सों से राहत मिलती है।

नुस्खे आजमाएं, लाभ उठाएं

● भोजन में घी, दूध, चावल, उड़द, नारियल, मलाई, मक्खन, शहद, मौसमी फल, हलवा, हरी साग–भाजी, टमाटर, गाजर, आंवला आदि का सेवन करना चाहिए।

● बादाम का हलवा, दूध में पकाया हुआ छुहारा, मीठा अनार, प्याज का रस, नारियल की गिरी और दूध की खीर, उड़द दाल का लड्डू, गन्ना रस, सौंठ और काली मिर्च तथा मैथी का लड्डू बहुत फायदेमंद है। योग्य वैद्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ताकि अपने शरीर के अनुकूल पथ्य–अपथ्य का चयन किया जा सके।

● चिकनाईयुक्त, मधुर, लवण और अम्ल रस वाले पदार्थ का सेवन करके अपना स्वास्थ्य बनाए रखें। बासी, दुर्गंधयुक्त अधिक चटपटे मसालेदार खानपान से बचना ही श्रेयस्कर है।

● ठीक समय पर, चबा–चबाकर प्रसन्नता पूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन के पूर्व नींबू पानी और भोजन के पश्चात छाछ पीना लाभदायक होता है।

● रूखे, कटु–तिक्त–कषाय, अति शीतल और वात प्रधान भोज्य पदार्थ न खाएं। अन्यथा जोड़ों के दर्द, गठिया और सायटिका से पीड़ित हो सकते हैं। इसी प्रकार अधिक खटाई से भी बचें, ताकि खांसी–सर्दी, जुकाम, नजला आदि से बचाव हो सके। नींबू और ताजा दही वर्जित नहीं है।

● अधिक देर तक भूखे न रहें, क्योंकि जठराग्नि की प्रबलता के कारण यथा समय भोजन नहीं करने से यह अग्नि शरीर की धातुओं को जला डालती है, जिससे जीवन शक्ति का क्षय होता है।

● सेहत बनाने के लिये प्रतिदिन स्नान भी जरूरी है। कुछ लोग ठंड के डर से कई दिन तक नहाते नहीं, यह उचित नहीं। पानी कुनकुना कर लेना चाहिए। अत्यधिक ठंडा और अधिक गर्म पानी नुकसान पहुंचाता है।

● मल–मूत्र विसर्जन में आलस्य नहीं करना चाहिए। रात को सिर ढंककर सोना भी उचित नहीं होता।

रसोई टिप्स

● सब्जी में मिर्च अधिक होने पर थोड़ा दही डालकर पका दें।

● नींबू की बाहरी सतह पर तेल लगाकर फ्रिज में रखें। नींबू अधिक दिनों तक ताजा बने रहेंगे।

● यदि दो गिलास आपस में फंस गए हैं, तो उन्हें रातभर फ्रिज में रखें सुबह आसानी से अलग हो जाएंगे।

● चावल बनाने से पहले यदि नमक मिले पानी भिगोकर रखा जाए। तो चावल सफेद बनेंगे।

● ब्रेड क्रंब्स की जगह सूजी या पिसे मुरमुरे काम में लाए जा सकते हैं।

● दाल या तरकारी के जल जाने पर टमाटर के छोटे टुकड़े करके साथ में जीरे का बघार डालने से जलने की बदबू दूर हो जाती है।

● यदि कुचले आलू बहुत नर्म हो जाएं, तो सफेद ब्रेड का चूरा डालकर अच्छी तरह मलिए, जिससे आलू सूखे व कुरकुरे हो जाएंगे।

● घी में पान का पत्ता या नमक का टुकड़ा डाल देने से घी बहुत दिनों तक रखा जा सकता है।

● मूली की सब्जी बनाते समय थोड़े पालक के पत्ते डालने से सब्जी जल्दी पकती है।

● जब भी दही बड़े बनाने हों तो उसके लिये हमेशा नयी दाल का प्रयोग करें। पुरानी दाल के बड़े बनाने में बड़े मुलायम नहीं बनेंगे।

● उबलते हुए दूध में चीनी कभी न मिलाएं इससे दूध फटने का खतरा रहता है।

● सब्जी जल्दी पक जाये और उसकी रंगत बनी रहे। इसके लिये सब्जी पकाते समय उसमें एक चुटकी चीनी डाल दें।

● यदि टमाटर पिलपिले हो रहे हों तो इन्हें बर्फ के पानी में कुछ देर रख दें। इससे टमाटरों में कड़ापन आ जायेगा।

● नमक में अक्सर सीलन आ जाती है। इससे बचने के लिये नमक में कुछ चावल के दाने डाल दें।

पाक्षिक पंचांग

9 फरवरी से 22 फरवरी 2026 तक
विक्रम संवत् 2082
फाल्गुन कृष्ण 1 से फाल्गुन शुक्ल 5 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
9	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण 8	सीताष्टमी
10	फरवरी	मंगल	---------- 8	
11	फरवरी	बुध	---------- 9	
12	फरवरी	गुरु	---------- 10	
13	फरवरी	शुक्र	---------- 11	विजया एकादशी
14	फरवरी	शनि	---------- 12	प्रदोष व्रत
15	फरवरी	रवि	---------- 13	महाशिवरात्रि
16	फरवरी	सोम	---------- 14	
17	फरवरी	मंगल	---------- 30	अमावस्या पंचक 9.30 दिन से
18	फरवरी	बुध	फाल्गुन शुक्ल 1	पंचक
19	फरवरी	गुरु	---------- 2	पंचक
20	फरवरी	शुक्र	---------- 3	पंचक
21	फरवरी	शनि	---------- 4	विनायकी चतुर्थी, पंचक समाप्त 8.12 रात्रि
22	फरवरी	रवि	---------- 5	

कृभको ने बताए उर्वरक प्रबंधन के गुर

इंदौर (कृषक जगत)। कृषक भारती कोऑपरेटिव लि. (कृभको) ने ग्राम सुनाला में 'फसल संगोष्ठी' आयोजित कर आधुनिक खेती, उर्वरकों के सही संतुलन और मिट्टी स्वास्थ्य को बेहतर बनाने जैसी जानकारी से अवगत कराया।

कार्यक्रम में कृभको के उप महाप्रबंधक डॉ. राजीव कुमार, नोएडा के प्रबंधक श्री शशिकांत, कस्तूरबा ग्राम के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अरुण शुक्ला, क्षेत्रीय प्रबंधक कृभको श्री राज बाबू कुमार, कृषि विस्तार अधिकारी सुश्री सोनम तिवारी, इंदौर प्रीमियर को-ऑपरेटिव बैंक प्रबंधक श्री रामचंद्र चौहान, कृभको क्षेत्रीय प्रतिनिधि श्री कुंदन गुर्जर, आमसभा सदस्य श्री मनोहर चौहान, सरपंच श्री पर्वतसिंह पटेल एवं अटाहेड़ा ब्रांच के समिति प्रबंधक उपस्थित थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. राजीव ने कृभको की उपलब्धियों लोक-कल्याणकारी कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कृभको द्वारा प्रति वर्ष समितियों को 20 प्रतिशत लाभांश दिया जा रहा है जो संस्था की मजबूती का प्रतीक है। संगोष्ठी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से कृषकों को सम्मानित किया गया।

चंबल ने दिये फसल सुरक्षा के उत्तम तरीके

भोपाल (कृषक जगत)। चंबल फर्टिलाइजर एंड केमिकल लि. ने सिवनी मालवा तहसील के ग्राम मुड़ियाखेड़ में कृषक संगोष्ठी आयोजित कर फसल सुरक्षा के उत्तम तरीके बताए। फसलों में विभिन्न पोषक तत्वों की पूर्ति करने के लिए चंबल उत्पादों का उपयोग कैसे किया जाए यह भी विशेषज्ञों ने बताया। 'सुपरराइजा और प्रणाम का है जादू खास पोषण मिलेगा पूरा फसल होगी लाजवाब' के नारे के साथ सम्पन्न हुई संगोष्ठी में मृदा उर्वरता, फास्फेटिक उर्वरकों की भूमिका फसलों के लिए अन्य आवश्यक पोषक तत्व जैसे पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर, मैंगनीज और लोह उपलब्धता पर चर्चा की गई। इस अवसर पर कंपनी के एरिया मैनेजर श्री आशुतोष गौरव, कृषि विशेषज्ञ डॉ. आशीष सिंह, सहायक संचालक कृषि श्री राजीव यादव, सहायक विक्रय प्रबंधक श्री कुलदीप व्यास,उत्तम कृषि सहायक श्री सागर देशमुख, डीलर राठौर कृषि सेवा केंद्र सिवनी मालवा के श्री सुनील राठौर उपस्थित थे।

ई-टोकन से मिलेगी उर्वरक, किसानों की फार्मर आईडी बनाएं : कलेक्टर

आगर मालवा (कृषक जगत)। जिले में ई-विकास प्रणाली के अंतर्गत कृषकों को ई-टोकन के माध्यम से उर्वरक वितरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। सभी कृषकों की फार्मर रजिस्ट्री तैयार करने के निर्देश कलेक्टर श्रीमती प्रीति यादव ने गत दिनों कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में आयोजित समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक के दौरान राजस्व एवं कृषि विभाग के अधिकारियों को दिए।

कलेक्टर ने कहा कि फार्मर रजिस्ट्री का कार्य प्राथमिकता से पूर्ण किया जाए। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कैंप आयोजित कर पटवारियों के माध्यम से किसानों की फार्मर आईडी बनाई जाए। जिन कृषकों की फार्मर रजिस्ट्री हो चुकी है, उनके सभी खसरा नम्बर को जोड़ा जाए। साथ ही किसानों को ई-टोकन के माध्यम से उर्वरक प्राप्त करने के लिए जागरूक किया जाए।

बैठक में अपर कलेक्टर श्री आर.पी. वर्मा, एसडीएम आगर श्री मिलिंद ढोके, डिप्टी कलेक्टर श्री प्रेमनारायण परमार, श्रीमती किरण बरबड़े, श्री मंडलोई सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

शिवपुरी कृषि विभाग की झांकी हुई पुरूस्कृत

शिवपुरी (कृषक जगत)। गणतंत्र दिवस समारोह में जिला मुख्यालय पर विभिन्न विभागों की झांकी निकाली गई थी। इन झांकियों में कृषि विभाग की झांकी आकर्षण का केंद्र रही। झांकी में प्राकृतिक खेती, उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग,फसल विविधीकरण, उर्वरक की ई विकास प्रणाली एवं जैविक खाद्यान्नों की पैदावार एवं उपयोग करना आदि कृषि तकनीकों को बताया गया था। कार्यक्रम अवसर पर जिले के प्रभारी मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर एवं कलेक्टर श्री रविंद्र कुमार चौधरी ने उपसंचालक कृषि श्री पान सिंह करोरिया को पुरस्कार प्रदान दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के जिला सलाहकार श्री सर्वेश कुमार शर्मा, सहायक संचालक कृषि श्रीमती किरण रावत एवं उप संचालक कृषि/परियोजना संचालक आत्मा के सर्वश्री जगदीश कुशवाह, रोहित कुशवाह, श्रीमती अमिता गौतम, सौरव सेन, रामलखन धाकड़, श्रीमती चांदनी मौर्य, संदीप रावत, श्रीमती छाया पवार, कुलदीप कुनाल मीणा, डॉ. राहुल मौर्य आदि उपस्थित थे।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
➪ वार्षिक रु. 600/-
➪ दो वर्ष रु. 1000/-
➪ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' – प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

किसान की आवाज

मल्हारगढ़ क्षेत्र में हुई भीषण ओलावृष्टि ने हमारे किसान भाइयों की मेहनत पर गहरा प्रहार किया है। खेतों में बिछी अफीम की नष्ट फसल किसानों की तकलीफ की मौन कहानी कह रही है। यह सिर्फ प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि किसान की सालभर की मेहनत और आय का भारी नुकसान है।

मैं सरकार से मांग करता हूँ कि सर्वे कार्य को तुरंत पूरा कर वास्तविक नुकसान के आधार पर सम्मानजनक मुआवज़ा दिया जाए। राहत नहीं–किसान को उसका अधिकार मिलना चाहिए। किसान की हर चिंता हमारी जिम्मेदारी है, और इस कठिन समय में हम किसानों की आवाज़ बनकर उनके साथ मजबूती से खड़े हैं।

– जितेन्द्र कुमार पांडेय, कृषक जगत संवाददाता, मंदसौर, मो.: 9827544586

पुष्प महोत्सव में धार जिले को 12 पुरस्कार

धार (कृषक जगत)। उद्यानिकी विभाग, मप्र शासन द्वारा किसान कल्याण वर्ष 2026 के अंतर्गत मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुसार राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव-2026 का आयोजन गुलाब उद्यान परिसर, भोपाल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया गया।

पुष्प महोत्सव में प्रदेश के विभिन्न जिलों द्वारा विविध प्रकार के फूलों की आकर्षक प्रदर्शनियां लगाई गईं। इस अवसर पर धार जिले के कृषकों द्वारा पॉलीहाउस तकनीक से उगाई गई विभिन्न प्रजातियों के फूलों की भव्य प्रदर्शनी प्रस्तुत की गई। प्रदर्शनी में डच रोज, डिवाइन रोज, जरबेरा, लिसियन्थस, जिप्सोफिला, ब्लू एवं रेड डेज़ी, सनफ्लावर, लिमोनियम, क्रिसेंथेमम, एस्टर सहित अन्य फूल शामिल रहे। मुख्यमंत्री द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन कर उद्यानिकी विभाग एवं कृषकों द्वारा किए जा रहे नवाचारों एवं प्रयासों की सराहना की गई। इस आयोजन में धार जिले के कृषकों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न पुष्प प्रदर्शकों को उत्कृष्टता के आधार पर कुल 12 पुरस्कार प्राप्त हुए, जिससे जिले का नाम राज्य स्तर पर गौरवान्वित हुआ।

अमानक फफूंदनाशक से चना और मसूर की फसल हुई खराब

श्रीकर बायोटेक कम्पनी और विक्रेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज़

शिवपुरी (कृषक जगत)। अमानक कृषि आदानों से फसलों के खराब होने की घटनाएं कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। ऐसा ही एक मामला गत दिनों शिवपुरी जिले के खतौरा का सामने आया, जहां आसपास के 10 गांवों के किसानों द्वारा अमानक फफूंदनाशक का चना और मसूर की फसल में प्रयोग करने पर पत्ते जलने के साथ ही फसल काली पड़ गई। किसानों ने इस मामले की शिकायत जन सुनवाई में भी थी। शिकायत के बाद उप संचालक, कृषि, शिवपुरी द्वारा जिला स्तरीय जांच दल गठित की गयी। जांच प्रतिवेदन के आधार पर संबंधित विक्रेता एवं श्रीकर बायोटेक कम्पनी के खिलाफ थाना इंदौर में एफआईआर दर्ज़ की गई। दूसरी तरफ श्रीकर बायोटेक कम्पनी ने किसानों को मुआवजा देने से इंकार किया है।

उल्लेखनीय है कि शिवपुरी जिले के ग्राम खतौरा, एडवारा, विजरौनी आदि 10 गांवों के किसानों ने अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र खतौरा से श्रीकर बायोटेक प्रा. लि. का फफूंदनाशक उत्पाद कलिंगा खरीदा था, जिसका किसानों ने चना और मसूर की फसलों पर छिड़काव किया तो पत्तियां जल गईं और पौधे सूख गए। इससे क्षेत्र की बड़े रकबे की फसल प्रभावित हुई। कलेक्टर की जनसुनवाई में पीड़ित किसानों श्री शैलेन्द्र यादव, श्री दिनेश लोधी एवं अन्य निवासी एडवारा एवं कार्तिक पिता जगमोहन सिंह यादव, जगमोहन पिता बहादुर सिंह यादव निवासी विजरौनी ने अपनी शिकायत में कहा कि अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र, खतौरा से चना-मसूर फसल के लिए कलिंगा नामक दवाई ली थी, जिसके प्रयोग से उनकी फसल नष्ट हो गई। शिकायत के बाद उप संचालक, कृषि, शिवपुरी द्वारा जिला स्तरीय जांच दल गठित की गयी। जांच दल ने सामूहिक मौके पर जाकर निरीक्षण किया, जिसमें पाया कि श्रीकर बायोटेक प्रा. लि. के उत्पाद कलिंगा (केप्टान 70 प्रतिशत हेक्जाकोनाज़ोल 5 प्रतिशत डब्ल्यूपी) से चना फसल की पत्तियां एवं कुछ पौधे जले हुए पाए गए।

श्रीकर बायोटेक प्रा. लि. के मप्र प्रभारी, जोनल मैनेजर रामवीरसिंह यादव, शिवपुरी प्रभारी श्री मनोज जैन और विक्रेता अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र, खतौरा के दुकानदार मनोज जैन ने किसानों के साथ छलकर उक्त खराब कीटनाशक का विक्रय कर धोखाधड़ी की है। प्रस्तुत प्रतिवेदन में स्पष्ट उल्लेख किया गया कि यह नुकसान फफूंदनाशक दवाई के छिड़काव से हुआ है। इस कलिंगा दवाई को लेकर कई किसानों की शिकायतें प्राप्त हुईं। उक्त प्रकरण में कृषि विभाग द्वारा कलिंगा फफूंदनाशक का नमूना जब्त कर पूर्व में ही जांच के लिए प्रयोगशाला भेज कर दुकान को सील कर दिया था।

पीड़ित किसानों की सूची, मौका पंचनामा, जांच प्रतिवेदन, जनसुनवाई के आवेदन एवं तथ्यों के आधार पर श्री के. कोली, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी एवं कीटनाशक निरीक्षक, बदरवास के आवेदन पर 22 जनवरी 2026 को थाना इंदार में श्रीकर बायोटेक प्रा. लि. के मप्र प्रभारी, जोनल मैनेजर रामवीरसिंह यादव, शिवपुरी प्रभारी मनोज जैन और विक्रेता अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र, खतौरा के संचालक मनोज जैन के खिलाफ बीएनएस की धारा 318 (4), 61 (2) एवं कीटनाशक अधिनियम 1968 की धारा 29 के तहत मामला दर्ज़ किया गया।

संबंधितों के कथन

श्री पान सिंह करोरिया, उप संचालक कृषि, शिवपुरी ने कृषक जगत को बताया कि उक्त प्रकरण में श्रीकर बायोटेक कम्पनी और विक्रेता अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र, खतौरा के खिलाफ एफआईआर दर्ज़ करा दी गई है।

श्री के. कोली, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, बदरवास ने कृषक जगत को बताया कि क्षेत्र के करीब 150 बीघा अर्थात् 30 हेक्टेयर रकबे की फसल प्रभावित हुई। 10 गांवों में से हर गांव से एक-दो किसान की चना/मसूर फसल की पत्तियां फफूंदनाशक के छिड़काव से जल गई। हालांकि अब फसल में फ्रूटिंग भी होने लगी है। अभी एसआईआर कार्य में व्यस्त हैं। एक-दो दिन में पुन: फसलों का सर्वे किया जाएगा।

अग्रवाल कृषि सेवा केंद्र, खतौरा के संचालक श्री मनोज जैन ने कृषक जगत को बताया कि हम विक्रेता हैं, निर्माता नहीं। फफूंदनाशक से कुछ गांवों के किसानों की फसल प्रभावित हुई है, लेकिन उसमें भी अब सुधार हो रहा है। किसानों की हर समस्या में हम उनके साथ हैं।

श्री रामवीर सिंह यादव, ज़ोनल मैनेजर, श्रीकर बायोटेक प्रा. लि. ने कृषक जगत को बताया कि उसी बैच का फफूंदनाशक छिंदवाड़ा, नीमच, गुना और खरगोन भी भेजा गया था, लेकिन वहां से कोई शिकायत नहीं आई। हमारे प्रोडक्ट में कोई कमी नहीं है। सैम्पल की जांच रिपोर्ट अभी नहीं आई है। फसल खराब होने में स्थानीय क्लाइमेट, डोज़ की मात्रा और डालने की प्रक्रिया भी कारण हो सकते हैं। ऐसे में मुआवजा देने की बात बेमानी है।

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ ड्यूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। सम्पर्क - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर ODOP - मिर्च-खरगोन
जुलाई 26
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। संपर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119, नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक
डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

दाल उद्योग और कृषि प्रोसेसिंग को मिलेगा नया विस्तार : डॉ. यादव

इंदौर (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और दाल उत्पादन के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनाने का संकल्प लिया गया है। प्रदेश सरकार किसान, उद्योग और व्यापार तीनों को साथ लेकर विकास का नया मॉडल तैयार कर रही है। उन्होंने कहा कि निजी क्षेत्र में अनाज मंडी और फूड पार्क स्थापित किए जाए इसके लिए राज्य शासन द्वारा पूरी मदद दी जाएगी। निजी क्षेत्र में अनाज मंडी और फूड पार्क स्थापित करने के लिए उन्होंने निवेशकों का आह्वान भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव यहाँ ऑल इंडिया दाल मिल एसोसिएशन द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ग्रीन एक्स प्रदर्शनी के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, विधायक श्री रमेश मेंदोला तथा श्री गोलू शुक्ला, पूर्व महापौर श्री कृष्णमुरारी मोघे, श्री सुमित मिश्रा, श्री गौरव रणदीवे, ऑल इंडिया दाल मिल एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, सम्भागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े, पुलिस आयुक्त श्री संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर श्री शिवम वर्मा और नगर निगम आयुक्त श्री क्षितिज सिंघल भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दाल भारतीय भोजन का अभिन्न हिस्सा है और शाकाहारी समाज के लिए यह प्रोटीन का सबसे बड़ा स्रोत है। उन्होंने कहा कि दुनिया में दाल उत्पादन और

इंदौर में तीन दिवसीय ग्रीन एक्स प्रदर्शनी

उपभोग दोनों में भारत अग्रणी है। इसी दिशा में मध्यप्रदेश सरकार ने किसानों और कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए 5 साल का रोडमैप तैयार किया है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश देश का फूड बास्केट बन चुका है। खाद्यान्न उत्पादन में प्रदेश देश में दूसरे स्थान पर है। गेहूं, चना, मसूर, सोयाबीन और तिलहन उत्पादन में प्रदेश अग्रणी है। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने तुअर पर टैक्स हटाया है तथा उड़द और मसूर उत्पादन बढ़ाने के लिए योजना बनाई जा रही है। प्रोसेसिंग उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक मशीनरी और उद्योग स्थापना में हर संभव सहयोग दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अब निजी क्षेत्र को भी कृषि व्यापार और प्रोसेसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में आगे आने का अवसर दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यदि उद्योगपति निजी स्तर पर अनाज मंडी या फूड पार्क स्थापित करना चाहते हैं, तो सरकार उन्हें वही सभी सुविधाएं देगी जो सरकारी फूड पार्क में दी जाती हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ऑल इंडिया दाल मिल एसोसिएशन की तीन दिवसीय प्रदर्शनी ग्रीन एक्स का शुभारंभ किया। प्रदर्शनी में दाल मिलिंग, मसाला मशीन, फ्लोर मिल, राइस मिल सहित अन्य अत्याधुनिक तकनीकी उपकरण प्रदर्शित किए गए हैं। इस प्रदर्शनी में कनाडा, तुर्की, ताइवान, स्पेन, ब्रिटेन, चीन, इंग्लैंड सहित भारत के विभिन्न शहरों से आई आधुनिक मशीनों का भी प्रदर्शन किया गया है। कार्यक्रम को जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने भी संबोधित किया।

ऑल इंडिया दाल मिल एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण दिया और आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उद्योगपति, व्यापारी, दाल मिल संचालक एवं उद्योग जगत से जुड़े अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्य पुष्प महोत्सव में गुना का बजा डंका

पॉलीहाउस गुलाब के चारों प्रथम पुरस्कार मिले

गुना (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री किशोर कन्याल के कुशल नेतृत्व में गुना जिला गुलाब की उन्नत खेती के क्षेत्र में लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है। इसका सशक्त प्रमाण राज्य स्तरीय पुष्प

महोत्सव, भोपाल में देखने को मिला, जहां गुना जिले के पॉलीहाउस गुलाब उत्पादक किसानों ने पॉलीहाउस गुलाब श्रेणी के चारों प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर जिले को प्रदेश स्तर पर गौरवान्वित किया। पुष्प महोत्सव के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदर्शनी स्थल पर सर्वाधिक समय गुना जिले के पॉलीहाउस गुलाबों को देखने, उनकी गुणवत्ता, रंग, आकार एवं उत्पादन तकनीक की बारीकियों को समझने में बिताया।

पुरस्कार - गुना जिले के ग्राम टकनेरा के प्रगतिशील पॉलीहाउस गुलाब उत्पादक किसान श्री अनिमेष श्रीवास्तव ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तीन प्रथम पुरस्कार अपने नाम किए— गुलाब की जुमेलिया किस्म के लिए प्रथम पुरस्कार, गुलाब की हॉटस्पॉट किस्म के लिए प्रथम पुरस्कार, तथा सोलेरिया (पीले गुलाब) किस्म के लिए प्रथम पुरस्कार एवं सुशील दहीफले, महल कॉलोनी के किसान ने लाल गुलाब (टॉप सीक्रेट) में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं, गुना जिले के ही किसान श्री विष्णु धाकड़ को सोलेरिया (पीले गुलाब) किस्म के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर उप संचालक उद्यान श्री के.पी.एस. किरार ने मुख्यमंत्री से गुना जिले को गुलाब क्लस्टर प्रदान किए जाने हेतु आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान ग्राम सकतपुर, जिला गुना के प्रगतिशील किसान श्री शिवम चौहान ने मंच पर मुख्यमंत्री को गुलाब लगाकर आत्मीय स्वागत किया।

उद्यानिकी आयुक्त श्री अरविंद दुबे ने भी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर गुना जिले के पॉलीहाउस गुलाब उत्पादक किसानों, जिला प्रशासन एवं उद्यानिकी विभाग की टीम को हार्दिक बधाई प्रेषित की। कलेक्टर श्री किशोर कन्याल ने इस सफलता पर जिले के सभी पॉलीहाउस गुलाब उत्पादक किसानों एवं उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों से कहा कि यह उपलब्धि प्रशासन, विभाग और किसानों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है।

केंद्रीय बजट 2026-27: दुनिया के बाजारों से मुकाबला करने खेती में नई पहल

● शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार
मो.: 9893355391

केंद्रीय बजट 2026-27 ने कृषि क्षेत्र को भारत के विकास और समावेशन एजेंडा के केंद्र में रखा है। सरसरी तौर पर इस बार बजट में खेती को आजीविका, खाद्य सुरक्षा और गाँव-देहात की समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आने वाले समय में आने वाली कई नई पहल के बारे में बताया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रौद्योगिकी आधारित नवाचार, उच्च-मूल्य वाली फसलों के लिए लक्षित समर्थन और किसानों, महिलाओं तथा संबद्ध क्षेत्रों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

मछली पालन और जल-आधारित खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 500 जलाशयों और अमृत सरोवरों के एकीकृत विकास की योजना बनाई है। साथ ही, स्टार्ट-अप और महिला-नेतृत्व वाले समूहों के माध्यम से तटीय मछली पालन मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया है। मछली किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहित कर बेहतर बाजार पहुंच और आय स्थिरता सुनिश्चित की जाएगी।

फसल विविधीकरण पर भी जोर दिया गया है। तटीय क्षेत्रों में नारियल, चंदन, कोको और काजू की खेती को बढ़ावा मिलेगा, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में बादाम, अखरोट और पाइन नट्स पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। नारियल संवर्धन योजना के तहत पुराने पेड़ों को नई किस्मों से बदलने की पहल होगी। वहीं, काजू और कोको के लिए विशेष कार्यक्रम भारत को 2030 तक आत्मनिर्भर और वैश्विक प्रतिस्पर्धी बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण के तहत 'भारत-विस्तार' नामक एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित प्लेटफार्म होगा जो एग्रीस्टैक पोर्टल और भारतीय कृषि अनुसंधान को जोड़कर किसानों को खेती बाड़ी के बारे में सलाह देगा। यह पहल उत्पादकता बढ़ाने और खेती में जोखिम कम करने में मदद करेगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए शी मार्ट्स स्थापित किए जाएंगे। ये समुदाय-स्वामित्व वाले खुदरा केंद्र महिला उद्यमियों को बाजार संपर्क, वित्तीय साधन और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति प्रदान करेंगे।

अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री सीतारमण ने पशुधन क्षेत्र को भी प्राथमिकता दी है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम, ऋण-संबद्ध सब्सिडी और पशुधन उद्यमों का आधुनिकीकरण डेयरी और मुर्गी पालन के लिए सरकार एकीकृत मूल्य श्रृंखला बनाएगी। पशु चिकित्सा शिक्षा और बुनियादी ढांचे का विस्तार पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता को बेहतर बनाए जाने पर सरकार ज़ोर देगी।

वित्त मंत्री का बजट में खेती पर नजरिया केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्रांडिंग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा तक फैला हुआ है। काजू और कोको को प्रीमियम निर्यात के रूप में बढ़ावा देकर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित प्रणालियों को अपनाकर, भारत का लक्ष्य कृषि को मूल्य-वर्धित और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त क्षेत्र में बदलना है। यह बजट पारंपरिक ताकतों को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए किसानों और महिलाओं को सशक्त बनाता है तथा विविधीकरण के माध्यम से खेती में लचीलापन लाना है। फौरी तौर पर किसान भाई बजट को भले ही आकर्षक न माने लेकिन आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, आदि भारतीय खेती में बहुत खास होंगे।

आम बजट : किसानों के हितों की अनदेखी !

● मधुकर पवार, मो.: 8770218785

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और करीब 60 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप से कृषि पर आश्रित है। करोड़ों परिवारों की आजीविका कृषि से सीधे जुड़ी हुई है। पिछले सप्ताह केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में पेश किये गए आम बजट 2026-27 से किसानों को बड़ी उम्मीद थी कि सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), सिंचाई, किसान क्रेडिट कार्ड से ऋण सीमा और ब्याज दर में कमी तथा फसल बीमा के बारे में भी कुछ राहत देंगी लेकिन किसानों की अपेक्षाओं और घोषणाओं के बीच एक स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा है। बजट में किसानों के लिए अवसर तो दिखाई दे रहे हैं, पर सुरक्षा-कवच को और मजबूत करने की जरूरत महसूस की जा रही है।

भारत की कृषि आज भी असुरक्षा के साए में खड़ी है। देश की लगभग 60 प्रतिशत कार्यशील आबादी खेती पर निर्भर है, लेकिन राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 18-19 प्रतिशत तक सीमित रह गया है। यह असंतुलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नीतिगत प्राथमिकताओं की कमियों को उजागर करता है। आम बजट 2026-27 में सरकार ने कृषि को आधुनिक, तकनीक- आधारित और उच्च-मूल्य फसलों से जोड़ने की बात तो की, लेकिन जब सवाल किसानों की सुरक्षा के कवच—आय, मूल्य, सिंचाई और जोखिम का आया तो बजट कई मोर्चों पर अधूरा नजर आया।

प्रत्यक्ष आय सहायता के रूप में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना आज भी छोटे और सीमांत किसानों के लिए नकदी का अहम सहारा है। योजना से 11 करोड़ से अधिक किसान परिवार जुड़े हैं। लेकिन महंगाई और खेती की लागत जिस रफ्तार से बढ़ी है, उसके मुकाबले योजना की राशि में वर्षों वृद्धि नहीं की गई है। बजट में योजना की निरंतरता का आश्वासन है, पर राशि बढ़ाने या कवरेज विस्तार पर कोई ठोस कदम नहीं है। नतीजतन, आय-सुरक्षा का यह कवच समय के साथ कमजोर होते जा रहा है जबकि किसानों की जरूरतों में जबर्दस्त इजाफा हो गया है। इसे देखते हुए वर्तमान में दी जा रही सहायता नाकाफी है। इसे तुरंत दोगुना करने की आवश्यकता है।

खाद, बीज और दवाईयों की बढ़ती कीमतों के साथ मजदूरों की कमी से कृषि की लागत में भी साल-दर-साल वृद्धि हो रही है। अधिकांश किसान फसल बेचकर ही अपने परिवार की जरूरतें पूरी करने के साथ अगली फसल के लिए भी व्यवस्था करते हैं। लेकिन जब उसे फसल की न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम कीमत मिलती है तो उसके लिए कृषि लाभ का धंधा तो दूर, घाटे का धंधा बन जाती है। सरकार भी जानती है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों की लागत सुरक्षा का प्रमुख औजार है। सरकार हर साल न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करती है और खरीद की बात भी करती है, लेकिन अधिकांश कृषि उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य बमुश्किल से मिल पाता है। मध्यप्रदेश में सोयाबीन की फसल के दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मिले तो प्रदेश सरकार ने भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को हो रहे नुकसान की भरपाई की और करोड़ों रूपये की राशि का किसानों को भुगतान किया गया। यह भी सच है कि किसान अक्सर खुले बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर फसल बेचने को मजबूर होते हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य को लंबे समय से कानूनी दर्जा देने की मांग पर बजट में कोई उल्लेख नहीं किया गया। इससे यह संदेश गया कि कृषि उपज की मूल्य-सुरक्षा अभी भी प्रशासनिक विवेक पर निर्भर है, कानून के भरोसे पर नहीं।

फसल खराब होने पर किसान की आखिरी उम्मीद फसल बीमा ही होती है। लेकिन प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर किसानों की शिकायतें जैसे देर से दावा निपटान, नुकसान आकलन में पारदर्शिता की कमी अब भी बनी हुई हैं। बजट में योजना की निरंतरता तो है, पर भरोसेमंद सुधारों का खाका नहीं है। कर्ज के मोर्चे पर भी तस्वीर चिंताजनक है। संस्थागत ऋण की बात के बावजूद बड़ी संख्या में किसान आज भी महंगे गैर-संस्थागत कर्ज पर निर्भर हैं। कर्ज- पुनर्संरचना, ब्याज राहत या संकटग्रस्त किसानों के लिए विशेष सुरक्षा पैकेज पर बजट में कोई उल्लेख नहीं है। बजट में उर्वरक सब्सिडी, पशुपालन, मत्स्य पालन और तकनीकी पहलों पर खर्च बढ़ता दिखाई दे रहा है, लेकिन प्रत्यक्ष किसान-सुरक्षा से जुड़े उपाय कमजोर हैं। यह विरोधाभास बताता है कि सरकार दीर्घकालिक सुधारों की बात तो कर रही है, पर तत्काल सुरक्षा कवच को मजबूत करने से हिचक रही है जबकि सरकार भी जानती है कि देश के 80 से 85 प्रतिशत लघु और सीमांत किसान हैं जिन्हें आर्थिक सुरक्षा कवच की सख्त जरूरत है। कृषि को आधुनिक बनाना जरूरी है, लेकिन सुरक्षा के बिना सुधार अधूरे हैं। जब तक आय-सुरक्षा को मजबूत नहीं किया जाता, न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी बाध्यता नहीं मिलती, सिंचाई का दायरा व्यापक नहीं होता और फसल बीमा व कृषि ऋण में राहत नहीं मिलती तब तक किसान आत्मनिर्भर नहीं होगा और वह असुरक्षित ही रहेगा।

बजट की सुर्खियाँ बहुत, किसान की हिस्सेदारी कितनी ?

● सचिन बोंद्रिया

इंदौर (कृषक जगत)। केंद्रीय बजट 2026-27 पेश हो चुका है। हर बार की तरह इस बार भी बजट की सुर्खियों में विकास, तकनीक, निवेश और आत्मनिर्भर भारत जैसे बड़े शब्द प्रमुख रहे, लेकिन सवाल वही पुराना है-इस बजट में किसान वास्तव में कहाँ खड़ा है? बजट भाषण में कृषि क्षेत्र का उल्लेख अवश्य किया गया, उच्च-मूल्य वाली फसलों, कृषि विविधीकरण, पशुपालन, मत्स्य पालन और निर्यात बढ़ाने की बात भी कही गई, परंतु सीधे किसान को मिलने वाली राहत और आय सुरक्षा पर ठोस घोषणाएँ अपेक्षा के अनुरूप नहीं दिखीं।

सरकार ने यह जरूर कहा कि खेती को लाभ का व्यवसाय बनाया जाएगा, लेकिन उत्पादन लागत, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), फसल नुकसान और बाज़ार की अनिश्चितता जैसे ज़मीनी मुद्दों पर किसान आज भी असमंजस में है। बजट में तकनीक और डिजिटल कृषि की बात तो हुई, पर छोटे और सीमांत किसानों तक इसका लाभ कैसे पहुँचेगा, इस पर स्पष्ट रोडमैप नज़र नहीं आता।

खेती के साथ पशुपालन और मत्स्य पालन को आय के अतिरिक्त स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन इन क्षेत्रों में लगे किसानों के लिए बीमा, ऋण और बाज़ार समर्थन को लेकर बजट मौन दिखाई देता है। वहीं, प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे किसानों के लिए भी किसी विशेष पैकेज की घोषणा नहीं की गई।

किसान संगठनों का मानना है कि बजट में कृषि का ज़िक्र होना ही पर्याप्त नहीं है। किसान की आय, सुरक्षा और सम्मान को केंद्र में रखे बिना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत नहीं किया जा सकता। आज भी देश का किसान यही पूछ रहा है कि जब बजट की सुर्खियाँ इतनी बड़ी हैं, तो उसकी हिस्सेदारी आखिर कितनी है?

कुल मिलाकर, यह बजट नीति और संभावनाओं की बात तो करता है, लेकिन ज़मीनी किसान को तत्काल राहत देने के लिहाज़ से अधूरा माना जा रहा है। आने वाले समय में यह देखना अहम होगा कि बजट की घोषणाएँ खेत तक कब और कैसे पहुँचती हैं।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.३३, ०.३८ मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!